

MSME PULSE

अक्टूबर 2020

विश्लेषणात्मक संपर्क

ट्रांसयूनियन सिबिल

विपुल महाजन

vipul.mahajan@transunion.com

सलोनी सिन्हा

saloni.sinha@transunion.com

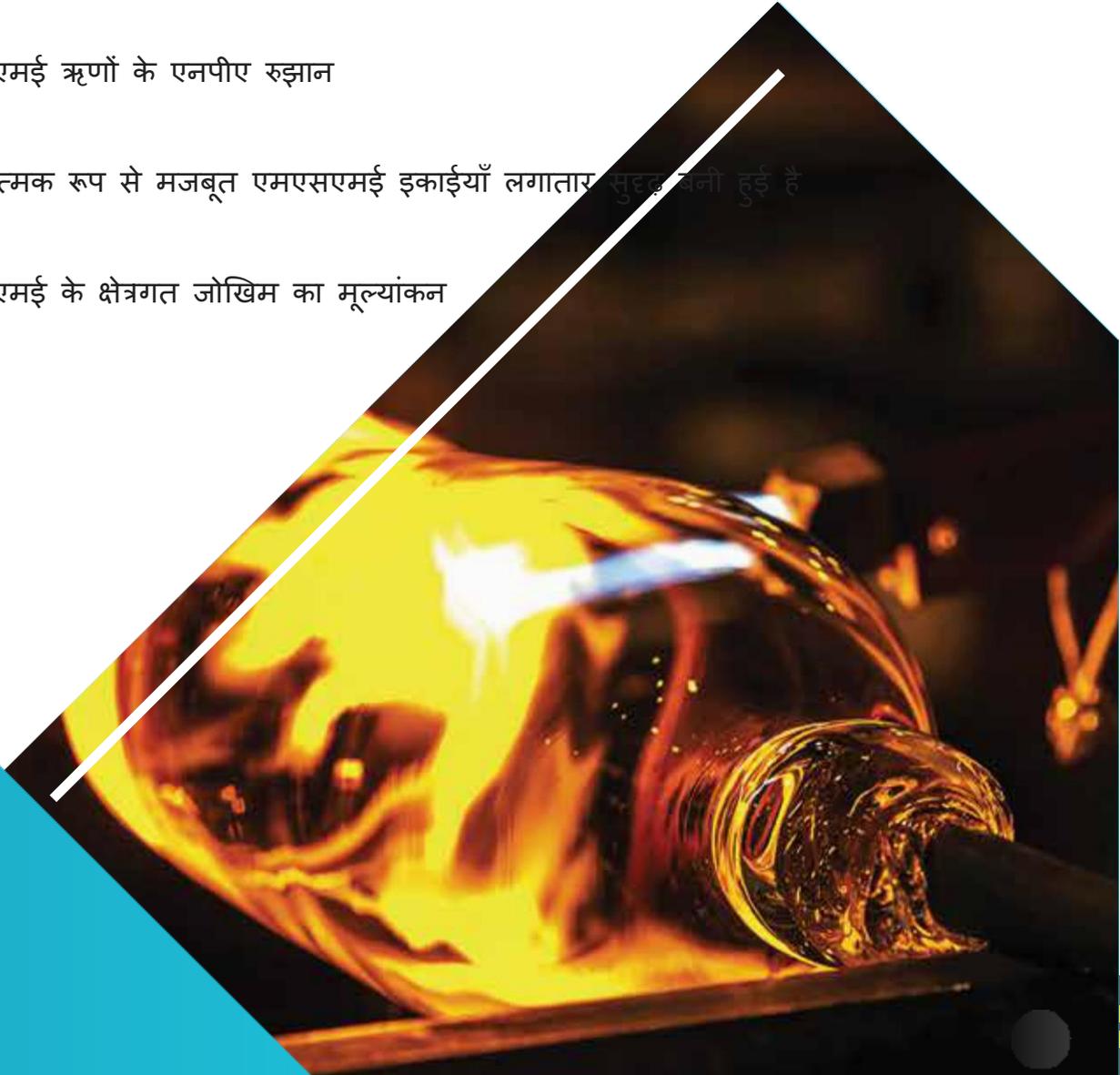
सिडबी

रंगदास प्रभावती

erdav@sidbi.in

विषयसूची

- 02 कार्यकारी सारांश
- 04 एमएसएमई ऋणों के संविभागपरक रुझान
- 05 भूगोल: एमएसएमई ऋणों की राशि में संवृद्धि
- 06 एमएसएमई ऋणों की बाजार हिस्सेदारी: एनबीएफसी बाजार हिस्सेदारी को गंवा रहे हैं
- 07 एमएसएमई ऋणों पर आपात ऋण-सीमा गारंटी योजना का प्रभाव
- 10 कोविड काल में एमएसएमई ऋणों में व्यवहारगत बदलाव
- 18 एमएसएमई ऋणों के एनपीए रुझान
- 20 संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयाँ लगातार सुदृढ़ बनी हुई हैं
- 23 एमएसएमई के क्षेत्रगत जोखिम का मूल्यांकन
- 24 निष्कर्ष



कार्यपालक सारांश

ईसीएलजीएस से एमएसएमई इकाईयों में ऋण प्रवाह को बढ़ावा: कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण एमएसएमई इकाईयों के ऋण प्रवाह में तेजी से गिरावट आई थी। मई 2020 में ईसीएलजीएस योजना की घोषणा और इसके कार्यान्वयन से एमएसएमई इकाईयों में ऋण प्रवाह को पुनर्जीवित करने लिए अति-आवश्यक समर्थन प्राप्त हुआ। इस योजना से उत्प्रेरित होकर, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने फ़रवरी 20 की तुलना में जून 20 में एमएसएमई को 2.6 गुना अधिक ऋण राशि संवितरित की। यहां तक कि निजी क्षेत्र के बैंकों के एमएसएमई खंड में ऋण संवितरण भी जून 20 में फ़रवरी 20 के स्तर पर पहुँच गए।

उन भौगोलिक क्षेत्रों में जहां पर लॉकडाउन कुछ कम कठोर था वहाँ ऋण प्रवाह की स्थिति बेहतर रही और ऋण की बकाया राशि में गिरावट कम रही : लॉकडाउन के दौरान मेट्रो क्षेत्रों के एमएसएमई ऋणों में सबसे तेज गिरावट आई और ईसीएलजीएस लागू होने के बाद आर्थिक बहाली की दर अपेक्षाकृत रूप से कम थी। जबकि शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में एमएसएमई ऋण संवितरणों की संख्या फ़रवरी 20 की तुलना में जून 20 की अवधि के लिए 3 गुना बढ़ गई जबकि मेट्रो क्षेत्रों में यह 1.86 गुना रही।

इसी तरह की प्रवृत्ति राज्य स्तर पर भी देखी गई है – अर्थात बिहार, झारखंड, पंजाब और केरल राज्यों में फ़रवरी 20 की तुलना में जून 20 के ऋण संवितरणों की संख्या में 4 गुना वृद्धि हुई; जबकि महाराष्ट्र और दिल्ली में इसी अवधि के दौरान क्रमशः 1.86 और 1.06 गुना वृद्धि हुई है।

सूक्ष्म ऋण घटक ने ऋण बकाया राशि में सबसे कम गिरावट दर्शाई है : जून 20 में कुल एमएसएमई ऋणों की बकाया राशि में 5.7% वर्षानुवर्ष कमी हुई है। तथापि, 4.5 लाख करोड़ रुपए की ऋण बकाया राशि के साथ सूक्ष्म ऋण घटक में 1% वर्षानुवर्ष वृद्धि हुई। जबकि सभी एमएसएमई उप-क्षेत्रों को ईसीएलजीएस से लाभ हुआ है, सूक्ष्म ऋणों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि हुई है और यह फ़रवरी 20 के आंकड़ों की तुलना में जून 20 में 3 गुना बढ़ी है।

ताजा एमएसएमई ऋण संवितरणों में एनबीएफसी पिछड़ गए और उनकी बाजार हिस्सेदारी में गिरावट आई: जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी बैंकों द्वारा किए गए संवितरण पूर्व-कोविड स्तरों पर वापस आ गए हैं, एनबीएफसी जून 20 में फ़रवरी 20 में संवितरित राशियों के 20% तक ही पहुँच पाए हैं, जिसके परिणामस्वरूप एनबीएफसी ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी बैंकों के प्रति अपनी ऋण बाजार की हिस्सेदारी खो दी। हम आशा कर सकते हैं कि एनबीएफसी की ऋण बकाया राशि में सुधार होगा क्योंकि उनसे की गई व्यापारिक पूछताछों का स्तर जून 20 में फ़रवरी 20 के स्तर का 40% था और यह स्तर जुलाई 20 और अगस्त 20 में 60% हुआ है।

कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयों की आघात सहन करने की क्षमता बनी रही है: वैश्विक महामारी आने के पश्चात मार्च 20 से जून 20 के चार महीनों की अवधि के दौरान, सीएमआर-



1 से सीएमआर-3 के सर्व-प्रमुख खंड में चुकौती की चूक के सबसे कम उदाहरण हैं जो सावधि ऋणों में 25% रहे; और सीएमआर -7 से सीएमआर -10 के अव-प्रमुख खंड में नकद उधार / ओवर ड्राफ्ट सुविधाओं में भुगतान चूक 36% रही, सीएमआर -4 से सीएमआर -6 के प्रमुख घटक में सीएमआर -1 से सीएमआर -3 के सर्व-प्रमुख घटक की तुलना में उच्च उपयोग दर खंडों में अपेक्षाकृत अधिक संक्रमण हुआ है। अतः, यदि चुकौती में चूक और बढ़ती उपयोग दरों को दबाव के शुरुआती संकेतों के रूप में माना जाए, तो संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयों में इस वैश्विक महामारी द्वारा उत्पन्न आर्थिक व्यवधानों के आघात को सहन करने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक बनी रही है।

संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयां सभी क्षेत्रों में विद्यमान हैं: हमने भारतीय रिजर्व बैंक की दिनांक 07 सितंबर 2020 की रिजॉल्यूशन फ्रेमवर्क फॉर कोविड 19 विषयक विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट में उल्लिखित एमएसएमई इकाईयों के सीएमआर वितरण का विश्लेषण किया है। यह विश्लेषण दर्शाता है कि लॉजिस्टिक्स, होटल-रेस्तरां-पर्यटन और खनन जैसे क्षेत्रों में सर्व-प्रमुख एमएसएमई का अनुपात अपेक्षाकृत रूप से कम है। जबकि केमिकल एंड फार्मास्युटिकल्स, विनिर्माण और ऑटो उपकरण जैसे विनिर्माण और डीलरशिप क्षेत्रों में सर्व-प्रमुख एमएसएमई इकाईयों की अपेक्षाकृत रूप से बड़ी हिस्सेदारी है। लेकिन, सभी क्षेत्रों में एमएसएमई का एक बड़ा हिस्सा संरचनात्मक रूप से मजबूत है और मौजूदा आर्थिक चुनौतियों में तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में है।

अगस्त 20 में ऋण विषयक पूछताछ का सीएमआर वितरण, फरवरी 20 की तुलना में उच्च जोखिम की ओर बढ़ गया है: फरवरी 20 की तुलना में अगस्त 20 की अवधि हेतु सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, निजी बैंकों और एनबीएफसी में सर्व-प्रमुख एमएसएमई सीएमआर-1 से सीएमआर-3 के लिए सीएमआर वितरण घट गया है और अव-प्रमुख एमएसएमई जो सीएमआर-7 से सीएमआर-10 में आते हैं उनके लिए बढ़ गया है। एनबीएफसी संस्थाओं की अव-प्रमुख विषयक पूछताछ में उच्चतम वृद्धि देखी गई - जो फरवरी के 15% से बढ़कर अगस्त 20 में 24% हो गई है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की सर्व-प्रमुख विषयक पूछताछों में सबसे अधिक गिरावट देखी गई - जो फरवरी 20 में 38% से गिरकर अगस्त 20 में 32% हो गई। हालांकि, सभी ऋणदाता प्रकारों में माह-दर-माह सीएमआर वितरण का गतिमार्ग फिर से फरवरी-20 के स्तर पर आ गया है।

एमएसएमई खंड में एनपीए की दरें मार्च 20 की तुलना में जून 20 में थोड़ी अधिक हैं: अधिकांश एमएसएमई खंड की एनपीए की दरें जून 20 में मार्च 20 के स्तर से थोड़ी अधिक रहीं, लेकिन यह प्रवृत्ति पिछले वर्ष मार्च 19 की तुलना में जून 19 में हुई वृद्धि के समान ही है। एनबीएफसी ने जून 19 के 5.8% के एनपीए स्तर की तुलना में जून 20 में 9.7% की तीव्र वृद्धि दर्शाई है। निजी बैंकों की एनपीए दरें भी जून 19 के 4.6% से बढ़कर जून 20 में 5.8% हो गई हैं।



एमएसएमई ऋण संविभाग के रुझान

भारत में जून 20 की अवधि के लिए तुलन पत्र पर कुल वाणिज्यिक ऋण जोखिम-राशि ₹67.03 लाख करोड़ रुपए है, जो जून 19 के ₹69.77 लाख करोड़ के मुकाबले कुछ कम है। एमएसएमई खंड में जून 20 तक ₹16.94 लाख करोड़ ऋण-जोखिम-राशि है और एमएसएमई के अधिकांश उप-खंडों में अति लघु और सूक्ष्म1 उप-खंड को छोड़कर ऋण-जोखिम-राशि में कमी देखी गई है। बड़े कॉरपोरेट खंड में जून 20 की अवधि के लिए ऋण-जोखिम-राशि ₹50.09 लाख करोड़ रही है और इसमें जून'19 की तुलना में जून 20 में 3.3% का वर्षानुवर्ष संकुचन देखा गया है।¹

प्रदर्श्य 1 : तुलन पत्र के आधार पर वाणिज्यिक क्रेडिट एक्सपोजर (₹ लाख करोड़ में)

	Very Small <₹10 Lakhs	Micro 1 ₹10-50 Lakhs	Micro 2 ₹50 Lakhs-1 Crores	Small ₹1-10 Crores	Medium1 ₹10-25 Crores	Medium2 ₹25-50 Crores	Large >₹50 Crores	Overall
Jun'18	0.78	1.91	1.30	6.51	3.27	2.67	44.90	61.33
Sep'18	0.82	2.02	1.37	6.84	3.38	2.75	48.93	66.11
Dec'18	0.85	2.10	1.42	7.04	3.45	2.78	49.99	67.63
Mar'19	0.88	2.18	1.48	7.29	3.55	2.87	52.33	70.59
Jun'19	0.88	2.14	1.45	7.23	3.48	2.79	51.79	69.77
Sep'19	0.89	2.20	1.47	7.25	3.47	2.78	51.50	69.57
Dec'19	0.92	2.23	1.50	7.33	3.48	2.77	51.49	69.73
Mar'20	0.93	2.19	1.45	7.02	3.33	2.62	52.03	69.58
Jun'20	0.91	2.17	1.42	6.81	3.18	2.46	50.09	67.03
Y-o-Y growth	3.2%	1.0%	-1.9%	-5.8%	-8.7%	-11.8%	-3.3%	-3.9%

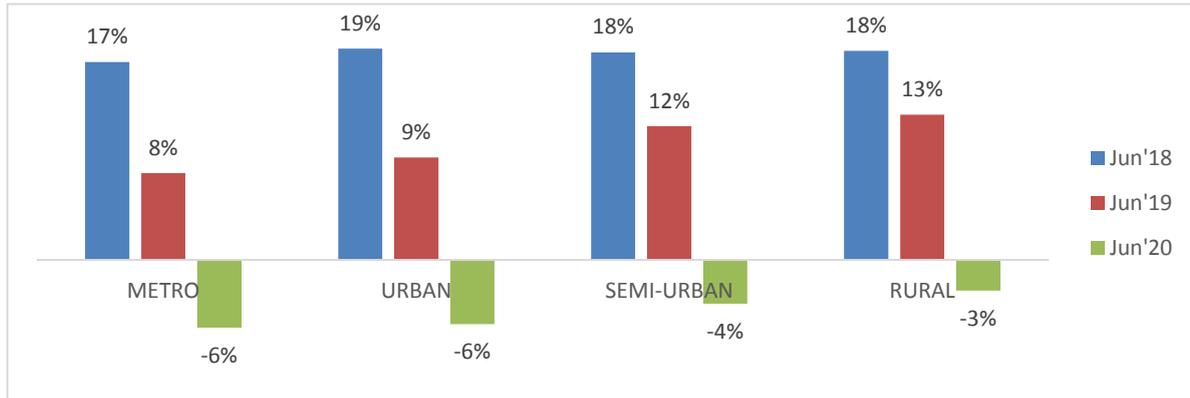
¹ वाणिज्यिक ऋण, प्रवेश स्तर पर समेकित ऋण-जोखिम-राशि आधार पर वर्गीकृत हैं, अति छोटे: <10लाख; सूक्ष्म1: 10 लाख से 50 लाख; सूक्ष्म2: 50 लाख से 1 करोड़; लघु: >=1 करोड़ से <10 करोड़; मध्यम1: >=10 करोड़ से <25 करोड़; मध्यम2: >=25 करोड़ से <50 करोड़; बड़े: >=50 करोड़। सूक्ष्म खंड में अति-लघु, सूक्ष्म1 व सूक्ष्म2 शामिल हैं और मध्यम खंड में मध्यम1 व मध्यम2 शामिल हैं।



भूगोल : एमएसएमई को दिए जाने वाले ऋण में संवृद्धि

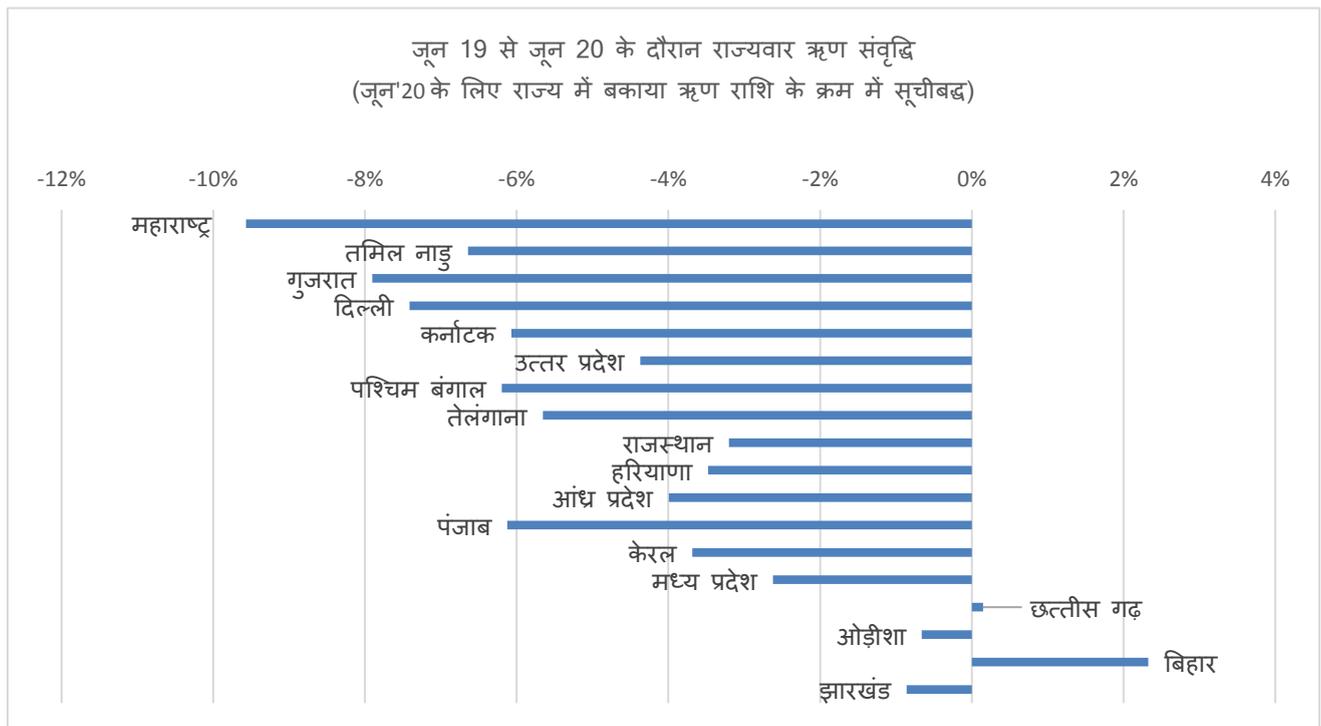
एमएसएमई ऋण बकाया-राशि की संवृद्धि दर में सभी क्षेत्रों में कमी आई है। मेट्रो और शहरी क्षेत्रों के ऋणों में सबसे तेज गिरावट देखी गई। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में भी मंद वृद्धि देखी गई है, लेकिन मेट्रो और शहरी क्षेत्रों की तुलना में मंदी की दर कम रही है।

प्रदर्श्य 2: एमएसएमई में क्षेत्रवार वर्षानुवर्ष ऋण संवृद्धि



राज्य-वार एमएसएमई संविभाग संवृद्धि यह दर्शाती है कि अधिकांश राज्यों में ऋण बकाया राशियों में आकुंचन हुआ है। शीर्ष 18 राज्यों को एमएसएमई ऋण बकाया के क्रम में दर्शाया गया है। महाराष्ट्र ने संवृद्धि में सबसे अधिक मंदी का अनुभव किया है, इसके बाद गुजरात का स्थान रहा है। जबकि छत्तीसगढ़ और बिहार में एमएसएमई संविभाग में मामूली संवृद्धि देखी गई है।

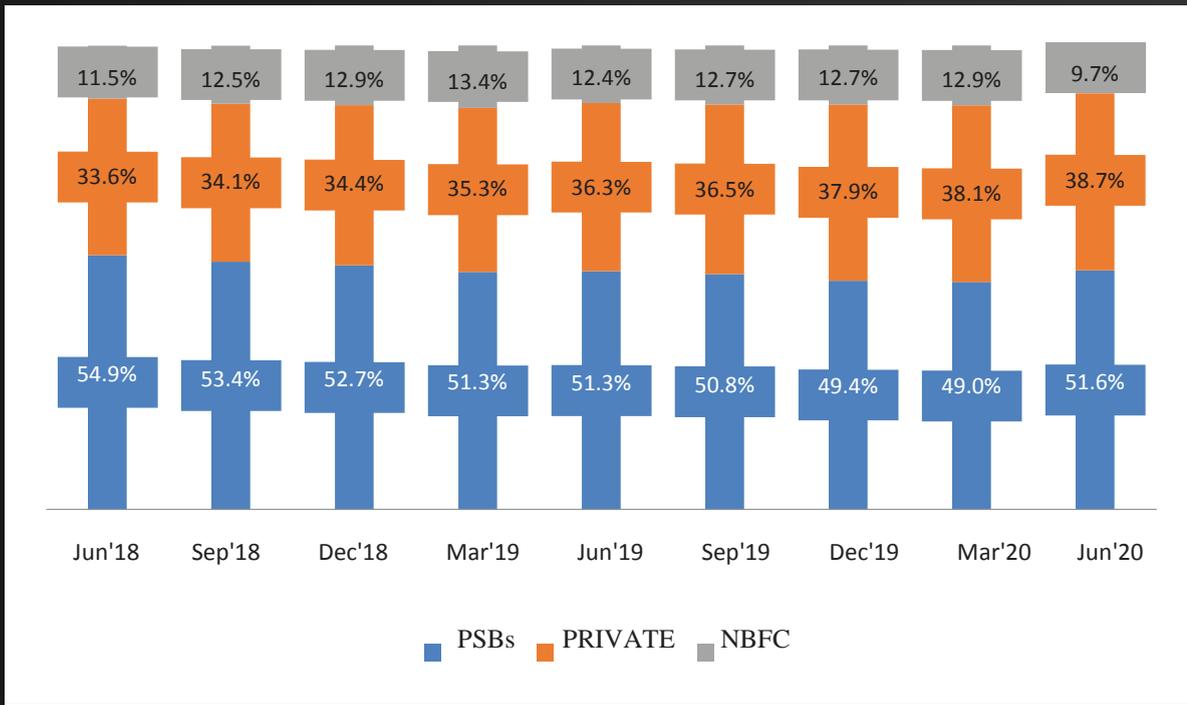
प्रदर्श्य 3 : एमएसएमई में राज्यवार वर्षानुवर्ष ऋण संवृद्धि



एमएसएमई वित्तीय बाजार हिस्सेदारी : एनबीएफसी ने बाजार हिस्सेदारी को गंवाया

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी) पारंपरिक रूप से एमएसएमई क्षेत्र के प्रमुख ऋणदाता हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से सामान्य प्रवृत्ति यह है कि निजी बैंकों और एनबीएफसी ने एमएसएमई क्षेत्र का बड़ा हिस्सा हासिल करने में पीएसबी के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा की है। तथापि, कोविड -19 वैश्विक महामारी और सरकार द्वारा घोषित प्रोत्साहन पैकेजों के कारण देशव्यापी लॉकडाउन ने इस प्रवृत्ति को बदल दिया है। पीएसबी ने अपनी बाजार हिस्सेदारी को [मार्च 20 में 49.0% से जून 20 में 51.6%] फिर से हासिल कर लिया है। निजी बैंकों द्वारा भी अपनी बाजार हिस्सेदारी का विस्तार जारी है। तथापि, एनबीएफसी ने अपने पोर्टफोलियो की ऋण बकाया राशि में अपेक्षाकृत तेज गिरावट देखी है, जिससे उन्हें एमएसएमई ऋण उद्योग में बाजार की हिस्सेदारी खोनी पड़ रही है।

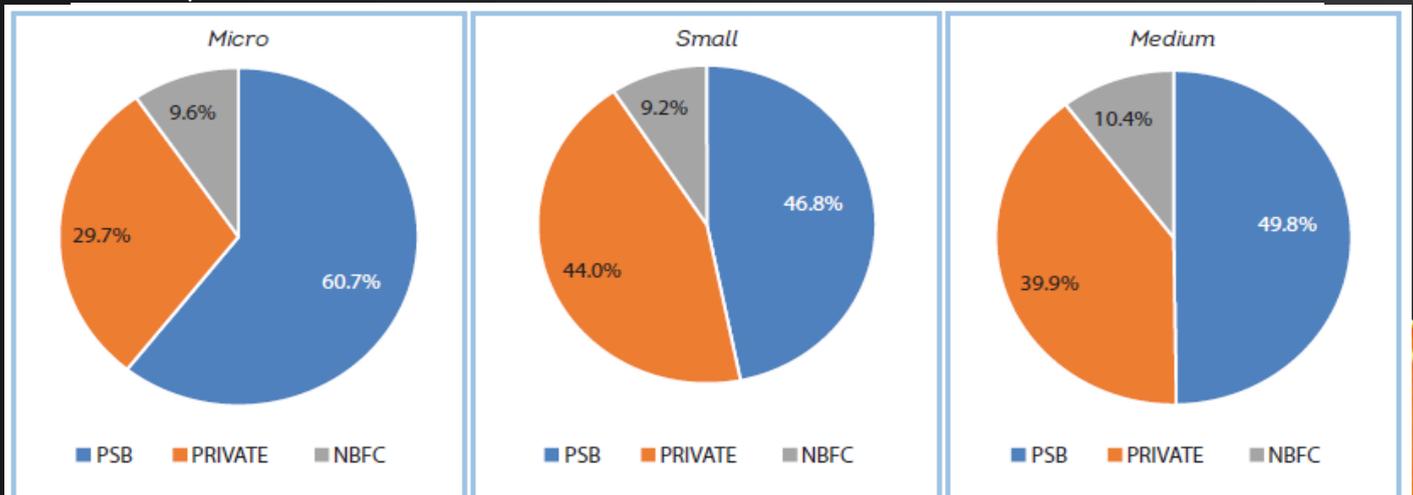
प्रदर्श्य 4 : दो वर्षों के दौरान एमएसएमई में ऋणदाताओं की आनुपातिक हिस्सेदारी



* अन्य ऋणदाता जिन्हें बाजार हिस्सेदारी के विश्लेषण से बाहर रखा गया है

एमएसएमई उप-खंडों में ऋणदाताओं की हिस्सेदारी: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) ने सूक्ष्म खंड के ऋणदाताओं को ऋण प्रदान करने में प्रमुख योगदान देना जारी रखा है, इस खंड में लगभग 60% की हिस्सेदारी है। सूक्ष्म उद्यमों को वित्तीय रूप से समावेशित करने में सरकारी बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उधारकर्ताओं के लघु खंड में सरकारी बैंक और निजी बैंकों की हिस्सेदारी क्रमशः 47% और 44% है। मध्यम खंड, जिसमें बड़े आकार के एमएसएमई ऋण हैं, इस खंड में मुख्य रूप से सरकारी बैंकों का वर्चस्व है।

प्रदर्श्य 5 : जून 20 तक विभिन्न एमएसएमई खंडों में ऋणदाताओं की हिस्सेदारी



एमएसएमई ऋणों पर आपात ऋण सीमा गारंटी योजना का प्रभाव

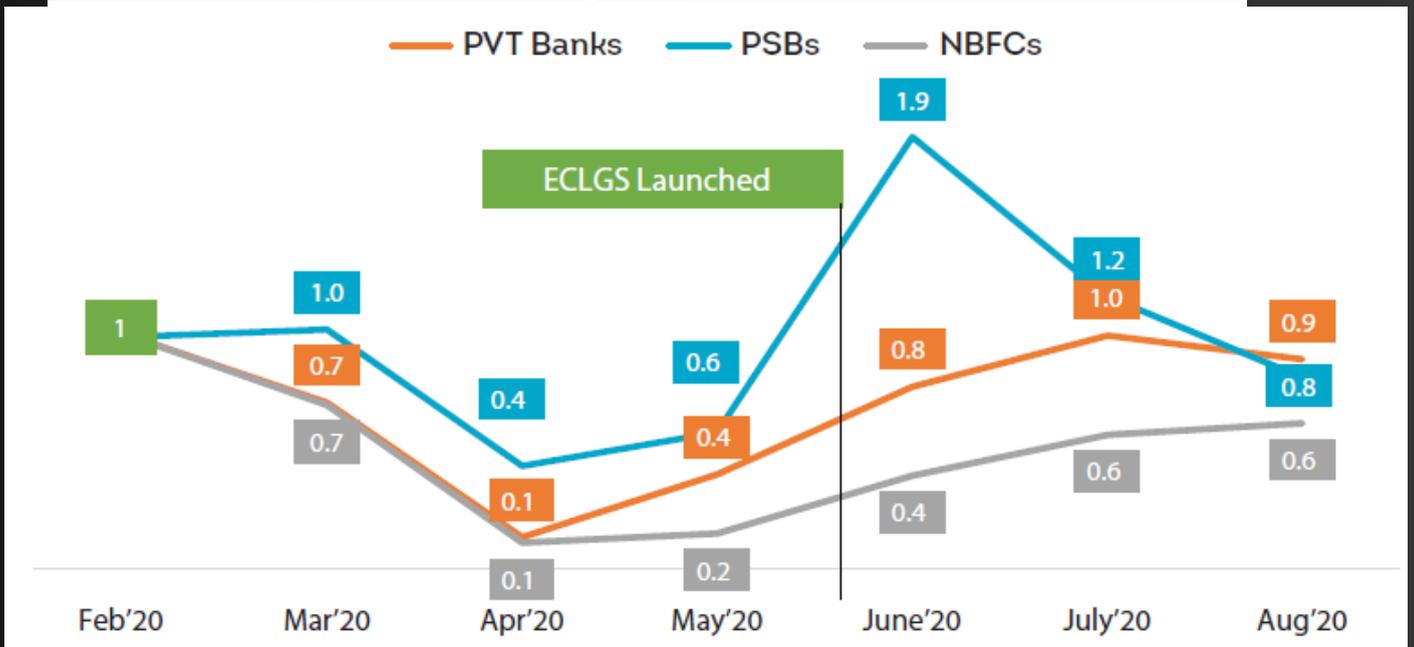
भारत सरकार द्वारा शुरू की गई आत्मनिर्भर भारत पहल में एमएसएमई क्षेत्र में पुनरुत्थान को बढ़ावा देने के लिए कई हस्तक्षेप शामिल हैं। निधियों की निधि के माध्यम से एमएसएमई में इक्विटी प्रवाह, दबाव ग्रस्त एमएसएमई के लिए गौण ऋण, टर्नओवर और निवेश के आधार पर एमएसएमई की परिभाषा, सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा 45 दिनों में एमएसएमई देनदारी को अदा करने और एमएसएमई को आपात ऋण सीमा प्रदान करने का प्रावधान शामिल है। इन सभी हस्तक्षेपों के बीच, एमएसएमई ऋणदाता पारितंत्र ने आपात ऋण सीमा गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) का बड़े पैमाने पर उपयोग किया।

ईसीएलजीएस के बारे में नवीनतम जानकारी और परिचालन दिशानिर्देश इसकी वेबसाइट eclgs.com पर देखे जा सकते हैं। ईसीएलजीएस के मुख्य आकर्षण निम्नानुसार हैं:

1. यह एमएसएमई के वित्तीयन के प्रति ₹3 लाख करोड़ अथवा 31 अक्टूबर तक, जो भी पहले हो, ऋण गारंटी प्रदान करता है
2. सहायता के लिए ऐसे एमएसएमई पात्र हैं, जिनका सभी ऋणदाताओं के प्रति संयुक्त बकाया ऋण, यथा 29 फरवरी, 2020 तक 50 करोड़ है और जिनका वार्षिक कारोबार वित्त वर्ष 2019-20 में ₹250 करोड़ तक का है।
3. योजना के तहत पात्र होने के लिए उधारकर्ता के खाते यथा 29 फरवरी, 2020 तक गत 60 दिनों से कम या उसके बराबर अवधि में नियमित होने चाहिए, अर्थात् सभी उधारकर्ता जिन्हें ऋणदाताओं द्वारा एसएमए-2 या एनपीए के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है, वे इस योजना के लिए पात्र हैं।
4. एमएसएमई इकाईयां 29 फरवरी, 2020 तक ₹50 करोड़ तक के अपने कुल बकाया ऋणों के 20% तक की सहायता राशि के लिए पात्र हैं, बशर्ते, उधारकर्ता अन्य सभी पात्रता मानदंडों को पूरा करता हो।

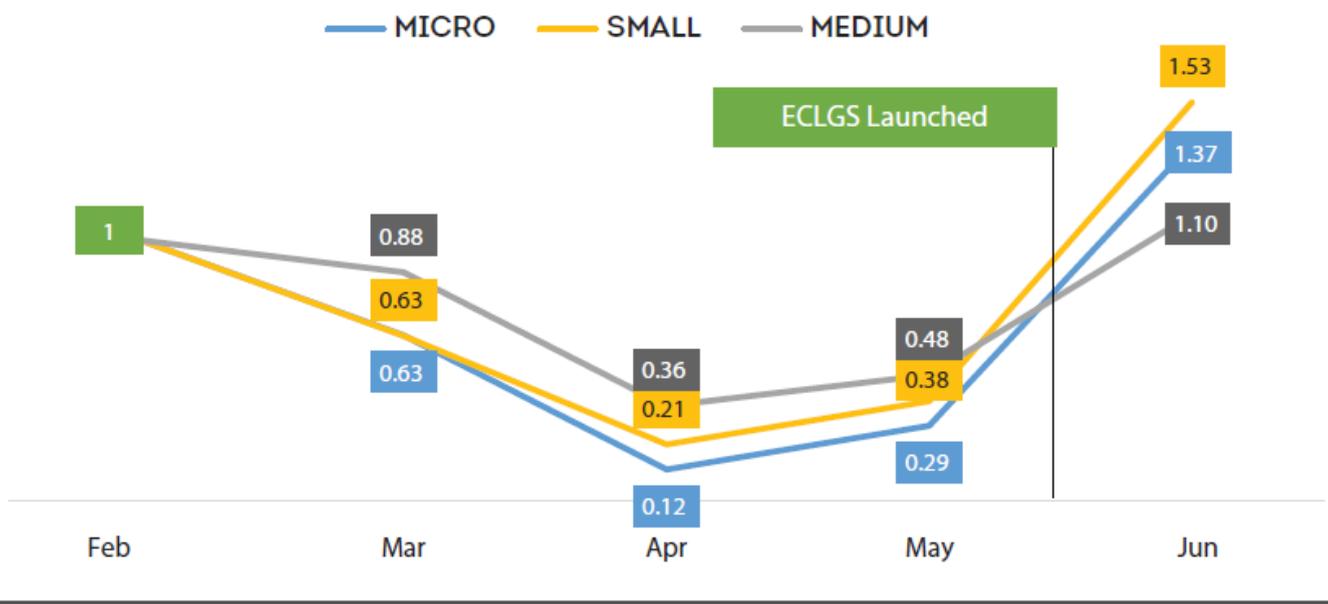
मई के महीने में आत्मनिर्भर भारत पहल की घोषणा की गई और ईसीएलजीएस के परिचालनगत दिशानिर्देश जारी किए गए। जून 20 के बाद से एमएसएमई को दिए गए ऋणों पर पर ईसीएलजीएस का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इससे उधारदाताओं द्वारा ऋण के लिए की गई पृच्छाओं में लॉकडाउन अवधि की तुलना में तुरंत वृद्धि हुई है और ये उच्च स्तर पर बनी हुई हैं।

प्रदर्श्य 6: ऋणदाता समूहों से वाणिज्यिक ऋण हेतु की गई पृच्छाओं को फ़रवरी 20 तक सूचकांकित किया गया है।



फरवरी 20 की पृच्छाओं को 1 पर सूचकांकित किया गया है। लॉकडाउन चरण में, सभी ऋणदाता समूहों की पृच्छाएँ प्रभावित हुईं। तथापि, लॉकडाउन चरण के दौरान सरकारी बैंक अपेक्षाकृत कम प्रभावित हुए। ईसीएलजीएस प्रारंभ होने के बाद, सरकारी बैंकों ने इस योजना पर सबसे पहले प्रतिक्रिया की थी और जून 20 में उनकी ऋण विषयक पृच्छाओं की मात्रा फरवरी की तुलना में 1.9 गुना तक बढ़ गई। निजी बैंकों की ऋण पृच्छाओं में क्रमिक संवृद्धि हुई है और जुलाई 20 में पृच्छाओं की मात्रा फरवरी में की गई पृच्छाओं की मात्रा के बराबर आ गई है। एनबीएफसी ने धीरे-धीरे ईसीएलजीएस का लाभ उठाया है, लेकिन वे अभी तक अपने कोविड से पहले के स्तर को पुनः प्राप्त नहीं कर पाए हैं। एमएसएमई को संवितरित किए गए ऋणों में पृच्छाओं की प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है। लघु और मध्यम खंडों की तुलना में सूक्ष्म घटक में ऋण संवितरणों (परिमाण) की संख्या सबसे अधिक रही है। तथापि, जून 20 में ऋण की संवितरित राशि (मूल्य) के दृष्टिकोण से संवितरण लघु खंड में सर्वाधिक रहा है।

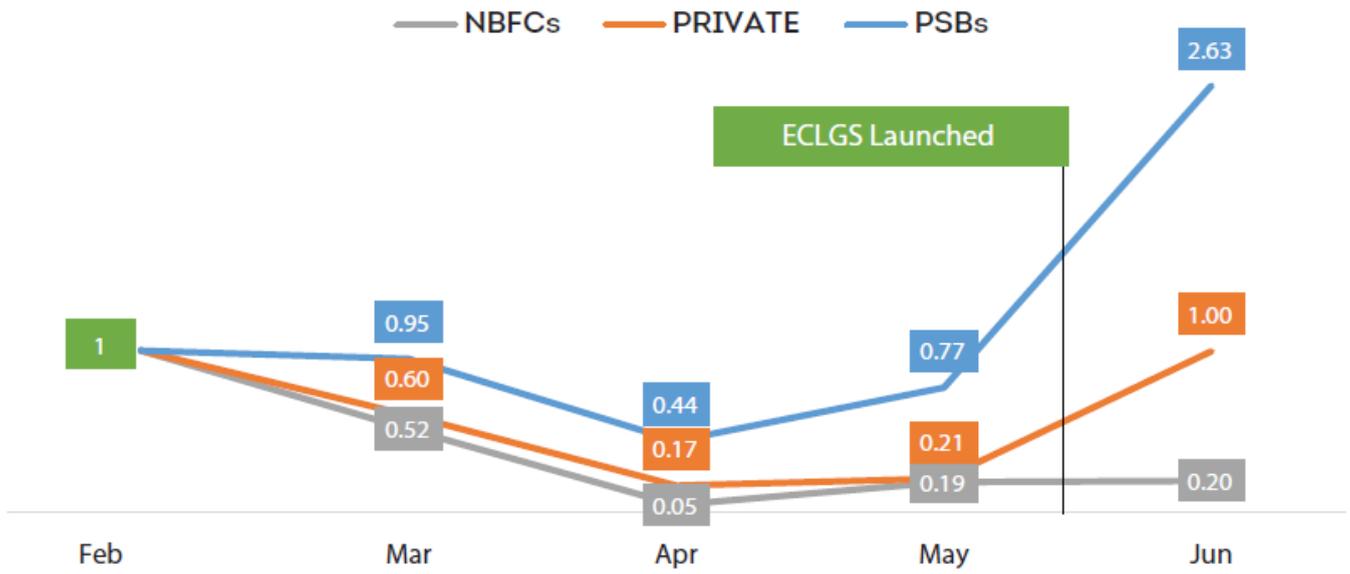
प्रदर्श्य 7: एमएसएमई के उप-खंडों में संवितरित ऋणों (मूल्य के अनुसार) को माह दर माह आधार पर फरवरी 20 तक सूचकांकित किया गया है।



ईसीएलजीएस में 20% की सीमा रखे जाने के कारण फरवरी 20 में संवितरित औसत ऋण राशि की तुलना में जून 20 में संवितरित औसत ऋण राशि काफी कम है। तथापि, इस सीमा के बावजूद फरवरी 20 की तुलना में एमएसएमई के सभी उप-खंडों को मिलकर संवितरित की गई कुल ऋण राशि जून 20 में अधिक है।

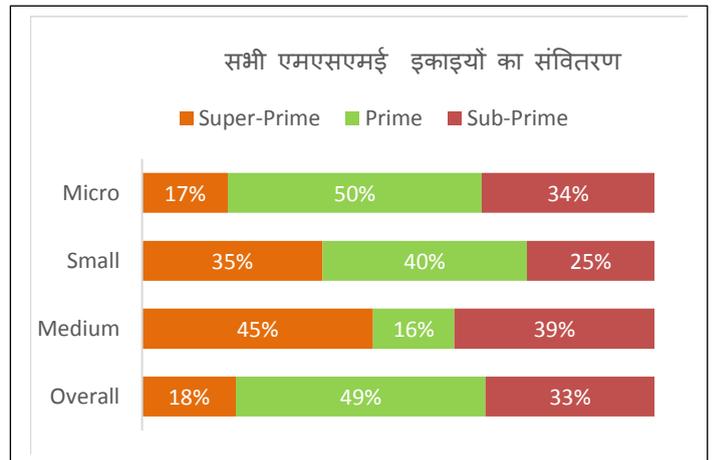
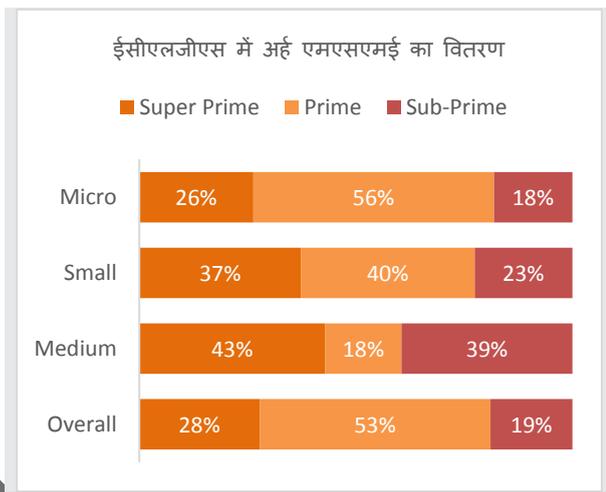
हालाँकि, ऋणदाता समूहों में ऋण राशि के रुझान समान नहीं हैं। ऋण के लिए की गई पृच्छाओं की ही तरह, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने जून 20 में फरवरी 20 की तुलना में 2.63 गुना अधिक ऋण राशि का संवितरण किया है। निजी बैंक फरवरी 20 से अपने पहले के संवितरण स्तर पर वापस आ गए हैं। एनबीएफसी, फरवरी 20 की संवितरण राशि की तुलना में जून '20 में केवल 0.2 गुना तक ही वापस लौट पाए हैं। लेकिन, हम आशा कर सकते हैं कि एनबीएफसी की संवितरण राशियाँ बेहतर स्तर तक पहुँच सकती हैं, क्योंकि फरवरी 20 की तुलना में जून 20 में ऋणों के लिए पृच्छाएँ 0.4 गुना थी जबकि, जुलाई 20 और अगस्त 20 में यह 0.6 गुना हो गई थी।

प्रदर्श्य 8: समूचे ऋणदाता समूह में मासानुमास ऋण संवितरण (मूल्यानुसार) फरवरी 2020 से सूचकांकित



ऋण जोखिम के नजरिए से, ईसीएलजीएस के तहत संवितरित किए गए ऋणों की 100% ऋण गारंटी होती है। लेकिन, यह तथ्य कि 81% अर्ह एमएसएमई उद्यम, संरचनात्मक रूप से मजबूत सीएमआर-6 या इससे बेहतर जोखिम वर्ग के होते हैं, योजना को और अधिक आत्मविश्वास प्रदान करता है। उप-खंडों के अंतर्गत सूक्ष्म खंड में सीएमआर-6 या बेहतर जोखिम रेटिंग वाली 82% कंपनियों की एक बड़ी हिस्सेदारी है, जबकि मध्यम खंड में सीएमआर-6 या बेहतर जोखिम रेटिंग वाली 61% कंपनियों की अपेक्षाकृत कम हिस्सेदारी है। जब इसकी उद्योग स्तर पर संविभाग-वितरण के साथ तुलना की जाती है, तो सुपर-प्राइम, प्राइम और सब-प्राइम में एमएसएमई क्रमशः 18%, 49% और 33% आते हैं।

प्रदर्श्य 9: यथा फरवरी 2020 तक सीएमआर के अनुसार उद्योग के सभी एमएसएमई और ऐसे एमएसएमई जो ईसीएलजीएस के लिए अर्ह हैं, उनका संविभाग वितरण²



2 यथा 29 फरवरी, 2020 तक 50 करोड़ रुपए या इससे कम के ऋण जोखिम और इससे कम की विगत 60 दिन की देय राशि वाले अर्ह एमएसएमई को एमएसएमई उद्यम के रूप में परिभाषित किया गया है।

एमएसएमई उद्यमों को सीएमआर के आधार पर इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है - सुपर प्राइम: सीएमआर-1 से सीएमआर-3, प्राइम: सीएमआर-4 से सीएमआर-6 और सब प्राइम: सीएमआर-7 से सीएमआर-10 तक।

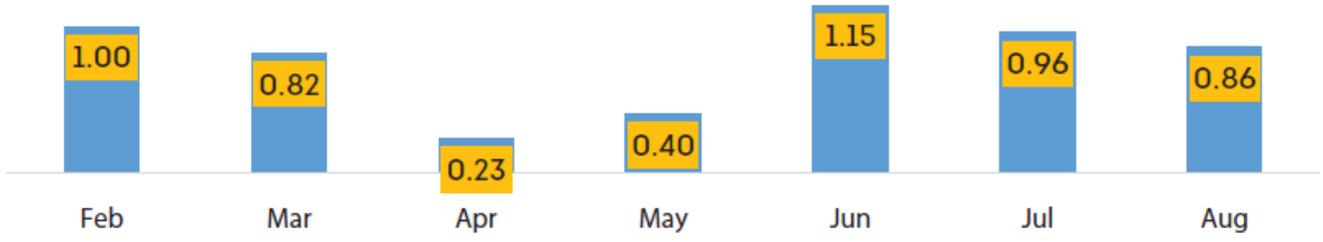


कोविड काल में एमएसएमई के ऋणदात्री उद्योग में व्यवहारगत बदलाव

कोविड ने एमएसएमई को उधार देने वाले पारितंत्र में कई व्यवहारगत बदलाव लाए हैं। ग्राहक व्यवहार, ग्राहक प्रोफाइल और बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार उधारदाताओं की प्रतिक्रिया ने एमएसएमई को ऋण प्रदायगी की गत्यात्मकता में फेरबदल ला दिया है।

ऋण संबंधी पृच्छाओं पर देशव्यापी तालाबंदी का प्रभाव अप्रैल 2020 और मई 2020 के दौरान स्पष्ट दिखाई देता है। लेकिन, ईसीएलजीएस योजना के प्रोत्साहन पैकेज ने ऋण पृच्छाओं को वापस उछालकर कोविड-पूर्व के स्तर पर पहुँचने में मदद की है। अगस्त 2020 में की गई ऋण पृच्छाएँ माह फरवरी 2020 में की गई पृच्छाओं का 0.86 गुना हैं और जैसा कि एमएसएमई पल्स के ईसीएलजीएस खंड में चर्चा की गई है; जून 2020 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, जुलाई 2020 में निजी क्षेत्र के बैंक और अगस्त 2020 में एनबीएफसी अग्रगामी रहे हैं।

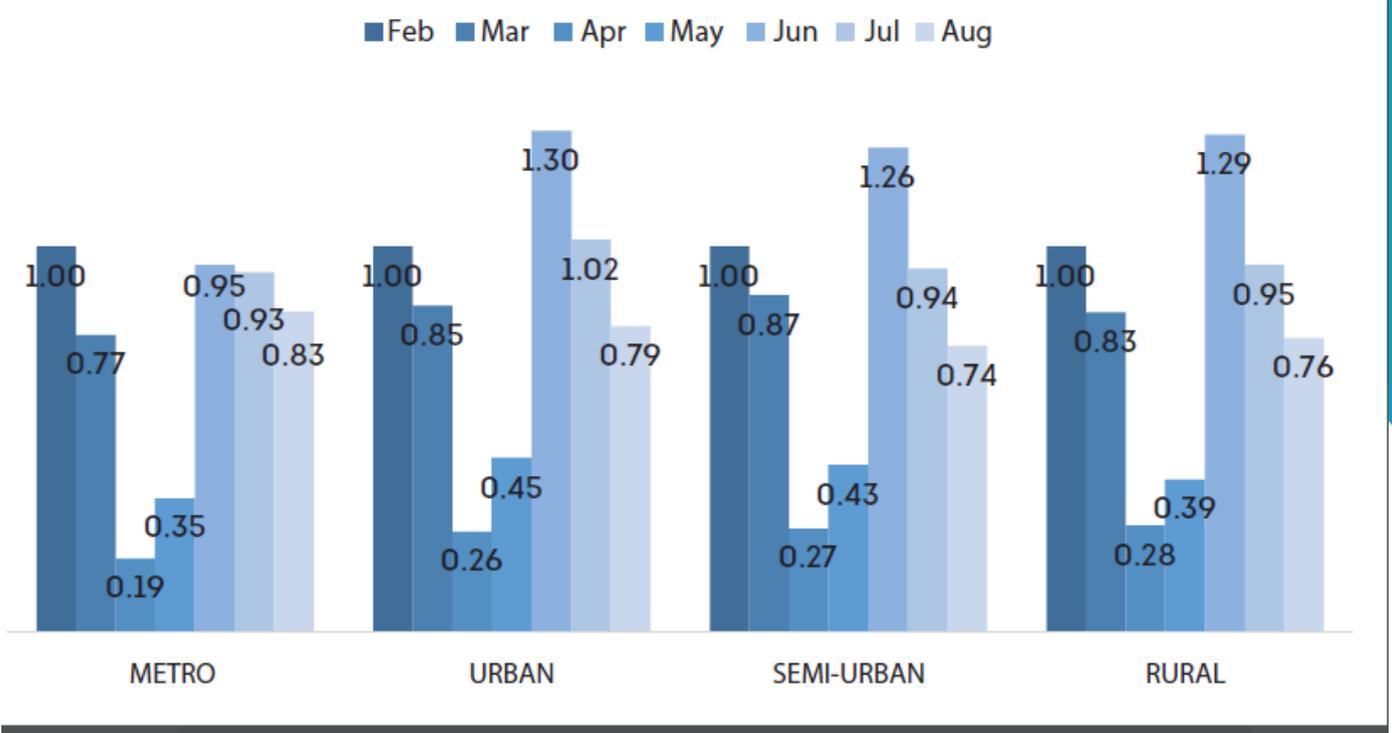
प्रदर्श्य 10: फरवरी 2020 से सूचकांकित वाणिज्यिक ऋण पृच्छाओं में मासानुमास परिवर्तन



विभिन्न क्षेत्रों में ऋण पृच्छाओं की स्थिति

भौगोलिक तौर पर गहनता से देखने पर यह पता चलता है कि अप्रैल 2020 और मई 2020 के दौरान मेट्रो शहरों में ऋण की पृच्छाएँ सबसे अधिक प्रभावित हुई थीं, लेकिन ईसीएलजीएस के पश्चात ऋण पृच्छाओं में वापसी होने के साथ वे अपेक्षाकृत स्थिर हो गईं। अप्रैल और मई 2020 के दौरान शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यद्यपि अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ा, लेकिन फिर भी यह पृच्छाओं के पूर्व-कोविड स्तर की तुलना में काफी है। ईसीएलजीएस के पश्चात शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जून 20 के दौरान ऋण पृच्छाओं में काफी तेजी से वृद्धि हुई, संभवतः इन क्षेत्रों में लॉकडाउन की तीव्रता कम होने से ऐसा हुआ है।

प्रदर्श्य 11: कोविड पूर्व व पश्चात क्षेत्रवार ऋण पृच्छाएँ [फरवरी 2020 की पृच्छाओं का अंकमान 1 है]

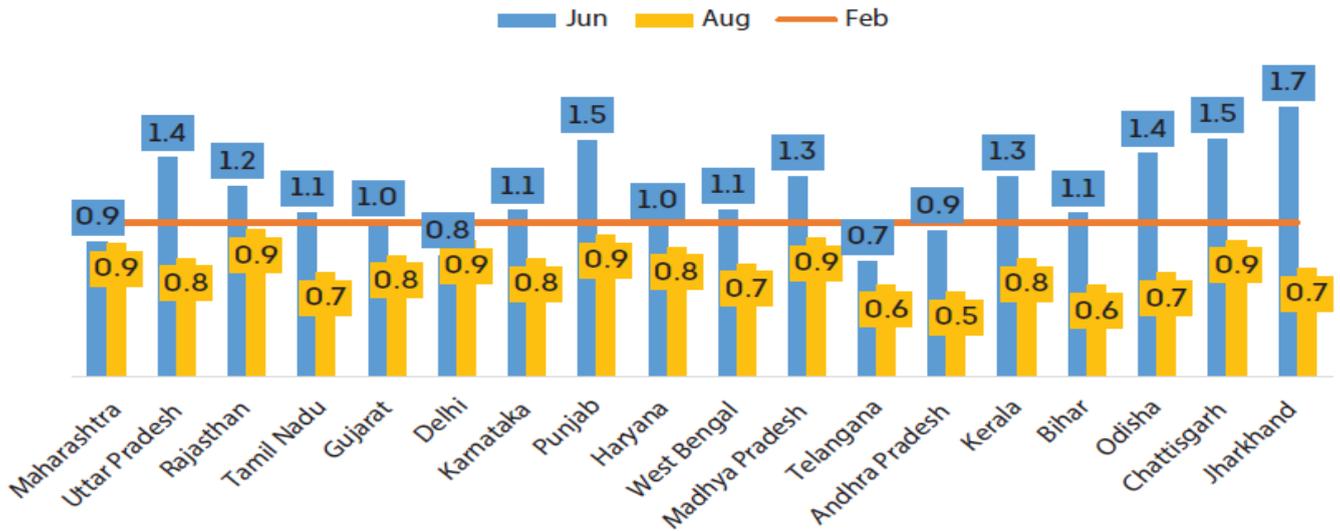


विविध राज्यों में ऋण पृच्छाओं का स्थिति

ईसीएलजीएस के कारण उच्च मात्रा में उत्पन्न हुई पृच्छाएँ जून 2020 में देखी गई थी, लेकिन महाराष्ट्र, दिल्ली, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश जैसे बड़े राज्यों के मामले में, जून 2020 के दौरान पृच्छाओं का स्तर फरवरी 2020 के पृच्छाओं के स्तर की तुलना में कम रहा। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश, केरल, छत्तीसगढ़ और झारखंड में जून 2020 के दौरान ऋण पृच्छाओं में बहुत तेज उछाल देखने में आया।

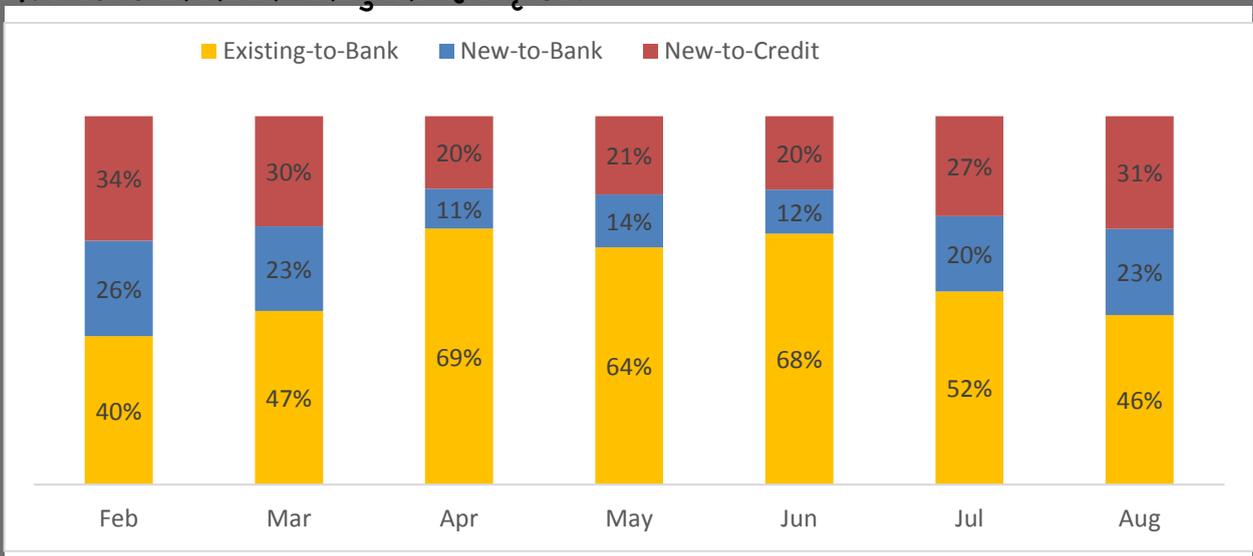
प्रदर्श्य 12: कोविड-पश्चात 2020 के महीनों के लिए राज्यवार ऋण-पृच्छाएँ [फरवरी 20 की पृच्छाओं का अंकमान 1 है]

शीर्ष 18 राज्यों को जून 2020 और अगस्त 2020 में ऋण पृच्छाओं की दृष्टि से घटते क्रम में रखा गया है



ऋणदाताओं ने कोविड की ऋण मांग के बाद जिस तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त की, उसे समझने के लिए उधारकर्ताओं को ऋणदाताओं के साथ उनके मौजूदा संबंधों के आधार पर वर्गीकृत किया गया। उधारकर्ता जिनके पास ऋणदाता के साथ एक मौजूदा व्यावसायिक ऋण संबंध था, उन्हें पूर्व-से-बैंकआबद्ध (ईटीबी) चिह्नित किया गया और वे ऋणदाता जिनके बैंक के साथ कोई व्यावसायिक ऋण संबंध नहीं है, लेकिन किसी अन्य ऋणदाता के साथ व्यावसायिक ऋण-संबंध थे उन्हें बतौर बैंक-को-नए (एनटीबी) चिह्नित किया गया है तथा किसी भी ऋणदाता के साथ व्यावसायिक ऋण संबंध न होने वालों को ऋण-हेतु-नए (एनटीएस) के तौर पर चिह्नित किया गया है। यह देखा गया कि अप्रैल से जून 2020 में एनटीसी उधारकर्ताओं की ऋण-पृच्छाओं में कमी आई तथा ईटीबी के ऋण-पृच्छाओं में बढ़ोत्तरी हुई। अलबत्ता, एनटीसी उधारकर्ताओं की ऋण-पृच्छाओं का हिस्सा जुलाई 2020 और अगस्त 2020 में लगभग कोविड-पूर्व के स्तर पर पहुँच गया। ईटीबी, एनटीबी और एनटीसी द्वारा ऋण-पृच्छाओं विषयक ये रुझान सार्वजनिक बैंकों, निजी बैंकों और एनबीएफसी के उधारकर्ता समूहों में एक जैसे ही बने रहे।

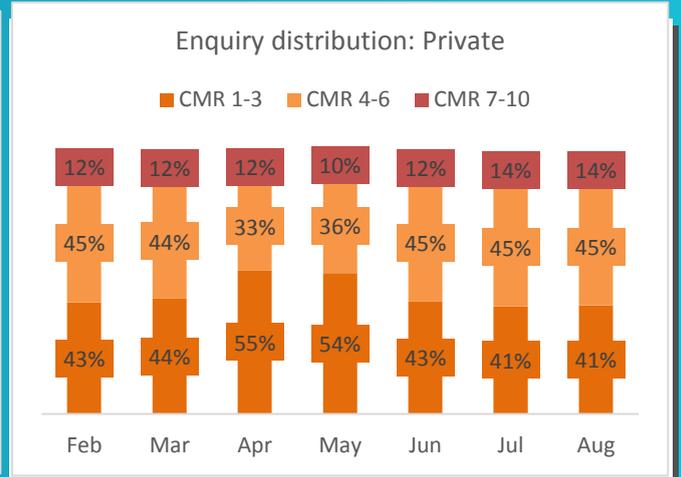
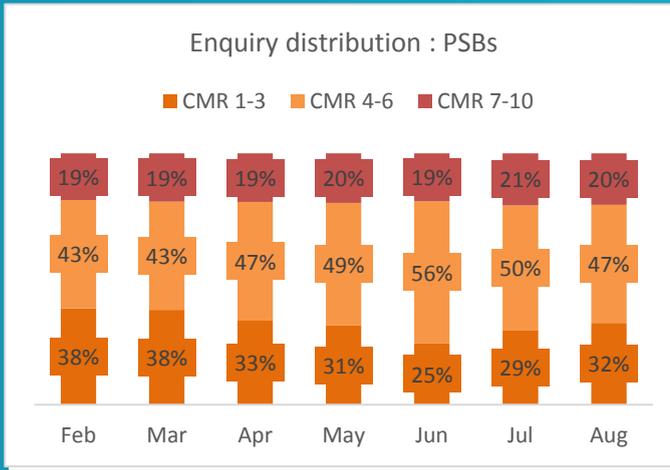
प्रदर्श्य 13: उधारकर्तावार मासानुमास ऋण पृच्छाएँ



पृच्छाओं के बारे में बदलता हुआ सीएमआर वितरण - पीएसबी/निजी/एनबीएफसी ऋणदाताओं की रैंक का वितरण

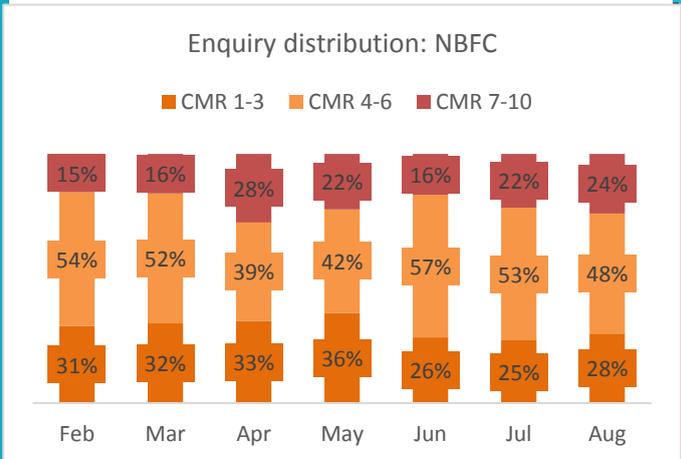
कोविड के बाद पृच्छाओं के सीएमआर वितरण में तेज गति आई थी, कुछ स्थितियों में रुझान कोविड-पूर्व के स्तरों पर वापस आ गए हैं, लेकिन अन्य स्थितियों में वे अभी भी बदले हुए हैं।

प्रदर्श्य 14: सीएमआर आधार पर समूचे उधारदाता वर्ग में मासानुमास ऋण पृच्छाएँ



सार्वजनिक बैंकों द्वारा कोविड-पश्चात की गई ऋण-पृच्छाओं में कोविड-पूर्व की तुलना में, सीएमआर 4 से 6 के लिए अधिक पृच्छाएँ और सीएमआर 1 से 3 के लिए कम पृच्छाएँ मिली हैं। हालांकि, धीरे-धीरे यह रुझान कोविड-पूर्व के स्तरों की ओर ही जा रहा है, लेकिन अभी भी यह पूर्णतः संरेखित नहीं हुआ है।

निजी बैंकों के लिए, यद्यपि उनके जुलाई 2020 और अगस्त 2020 की पृच्छाओं के वितरण को मोटे तौर पर कोविड-पूर्व के स्तरों से जोड़ा जा सकता है, तथापि सीएमआर 7 से 10 श्रेणी वाली पृच्छाओं में मामूली वृद्धि हुई है।

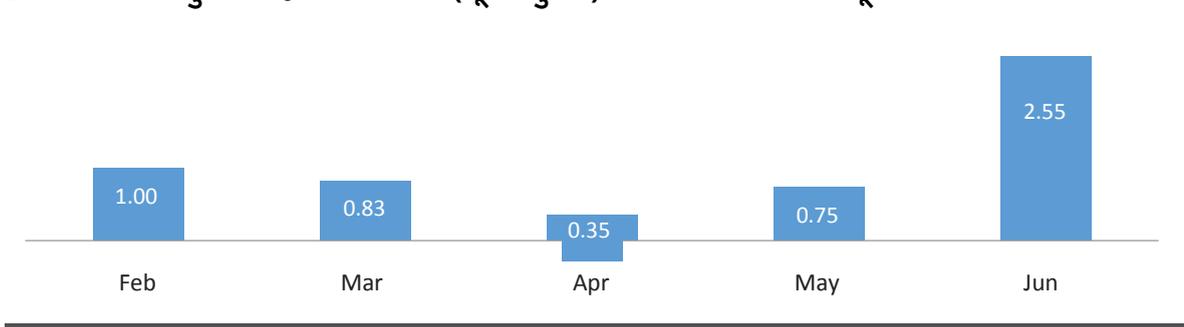


ऋण उत्पत्तियाँ: कोविड के पूर्व और पश्चात

प्रदर्श्य-1 से, यह स्पष्ट है कि ऋण संवृद्धि के धीमे होने के संकेत कोविड के पूर्व मिलने लगे थे और कोविड के प्रकोप ने इसमें सुधार की प्रक्रिया को और प्रभावित किया है जिससे ऋण-प्रवाह और सिकुड़ गया है। इसे दूर करने के लिए, सरकार और नियामकों ने चल-निधि बढ़ाने और व्यवसायों के लिए नकदी प्रवाह की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज प्रदान करके प्रतिक्रिया व्यक्त की है। एमएसएमई खंड में अप्रैल 2020 में ऋण-संवितरण वाले खातों की संख्या बहुत कम थी, लेकिन जून 2020 के बाद से ऋण गतिविधि निरंतर बढ़ी है।

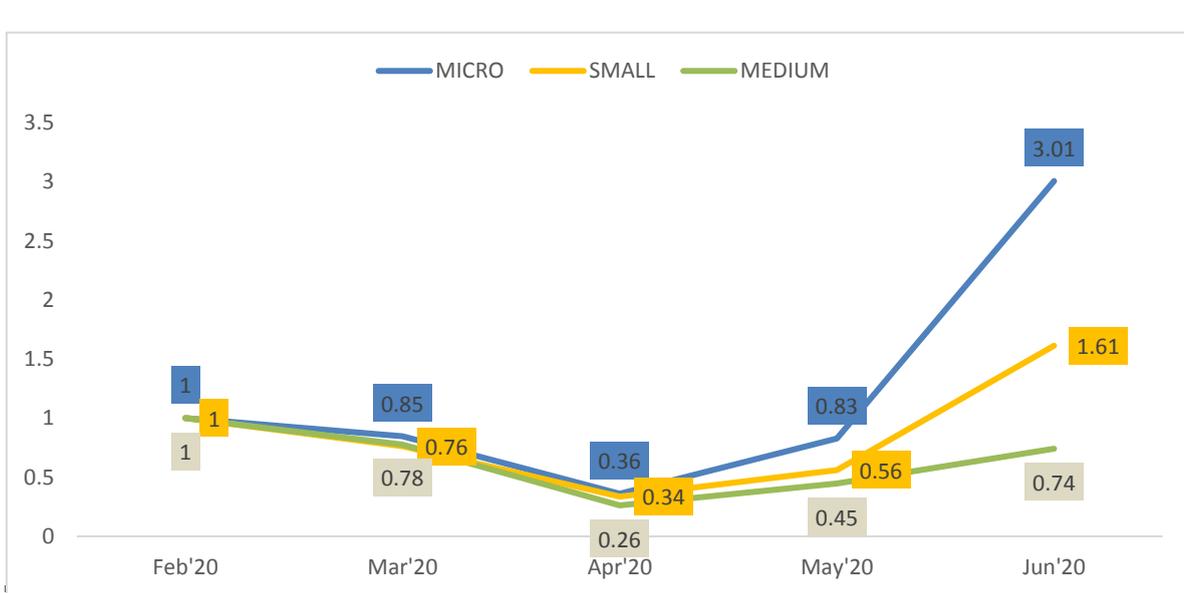
एमएसएमई उद्यमों को ऋण आपूर्ति पर पड़े कोविड के प्रभाव को समझने के लिए, फरवरी 2020 में एमएसएमई प्रतिष्ठानों को किए गए संवितरणों की संख्या 1 के रूप में सूचकांकित की जाती है। अप्रैल 2020 में, जब लॉकडाउन लगाया गया था, तो कोविड-पूर्व के फरवरी 2020 में हुए संवितरणों की तुलना में इनमें 0.35x की गिरावट आई थी और फिर जून 2020 में इन संवितरणों में उक्त फरवरी 2020 की तुलना में ही 2.55x की उल्लेखनीय वृद्धि भी हुई।

प्रदर्श्य 15: मासानुमास ऋण संवितरण (मूल्यानुसार) फरवरी 2020 तक सूचकांकित



सबसे अधिक ऋण संवितरण सूक्ष्म खंड में देखे गए और लघु खंड इसके पीछे-पीछे रहा। मात्रा की दृष्टि से अभी मध्यम खंड में संवितरणों को कोविड-पूर्व के स्तर तक पहुँचना बाकी है।

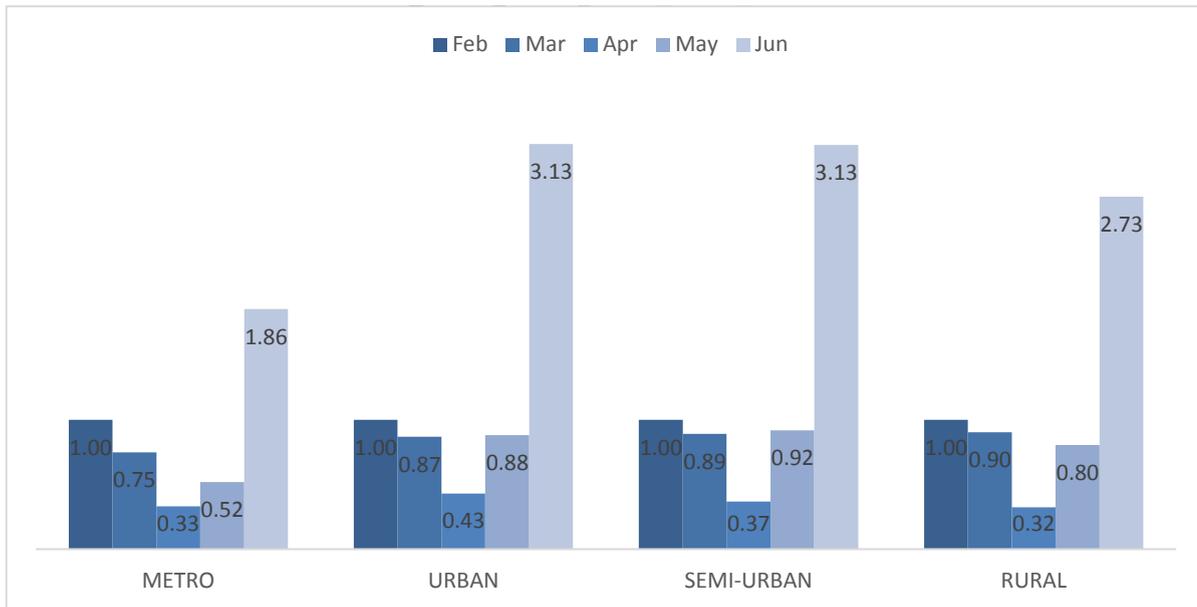
प्रदर्श्य 16: विविध उद्यम खंडों में मासानुमास ऋण संवितरण (मात्रानुसार) फरवरी 2020 तक सूचकांकित



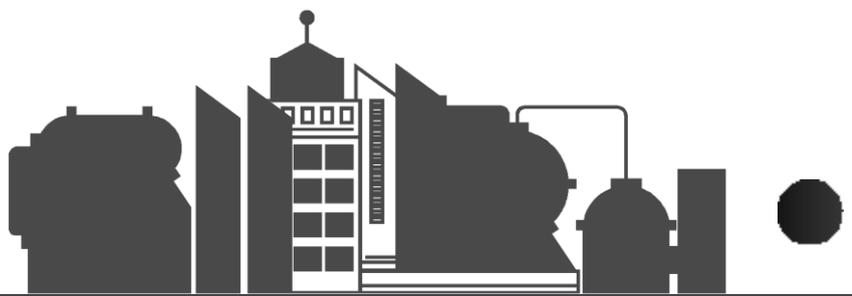
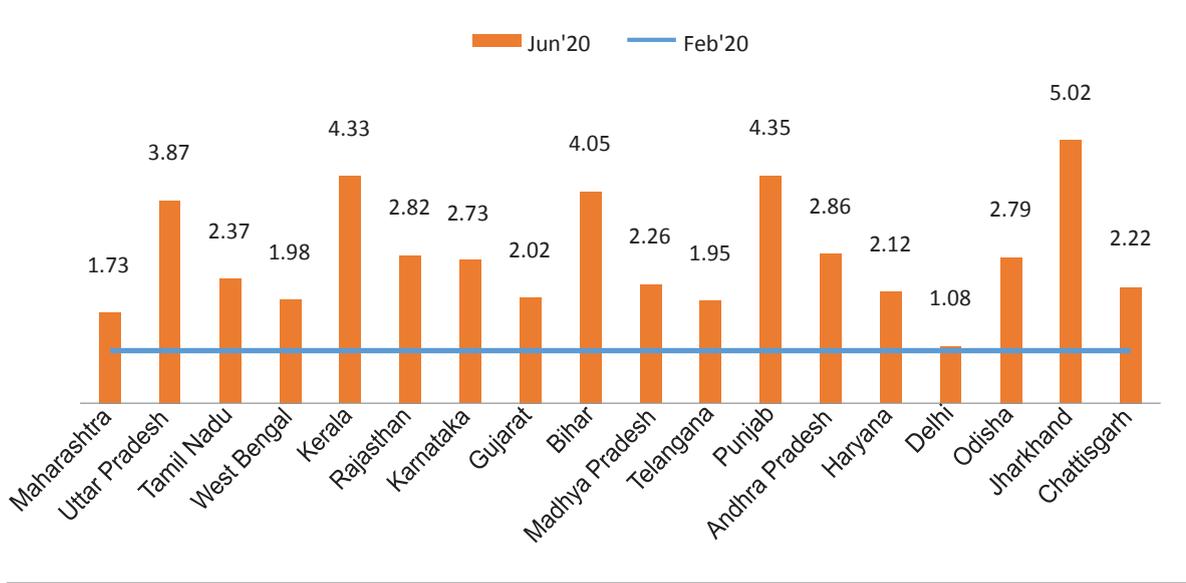
भौगोलिक आधार पर संवितरण:

भौगोलिक दृष्टि से भी इन रुझानों में शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण विषयक पृच्छाओं के भांति ही, मेट्रो क्षेत्रों की तुलना में, जून 2020 में तीव्र वृद्धि अनुभव की गई हैं। लेकिन, शुद्ध प्रभाव के तौर पर ईसीएलजीएस के हस्तक्षेप से सभी बाजार लाभान्वित हुए हैं।

प्रदर्श्य 17 : मासानुमास क्षेत्रवार ऋण संवितरण (मात्रा में) [फरवरी 20 के संवितरण अंकमान 1 पर सूचकांकित]

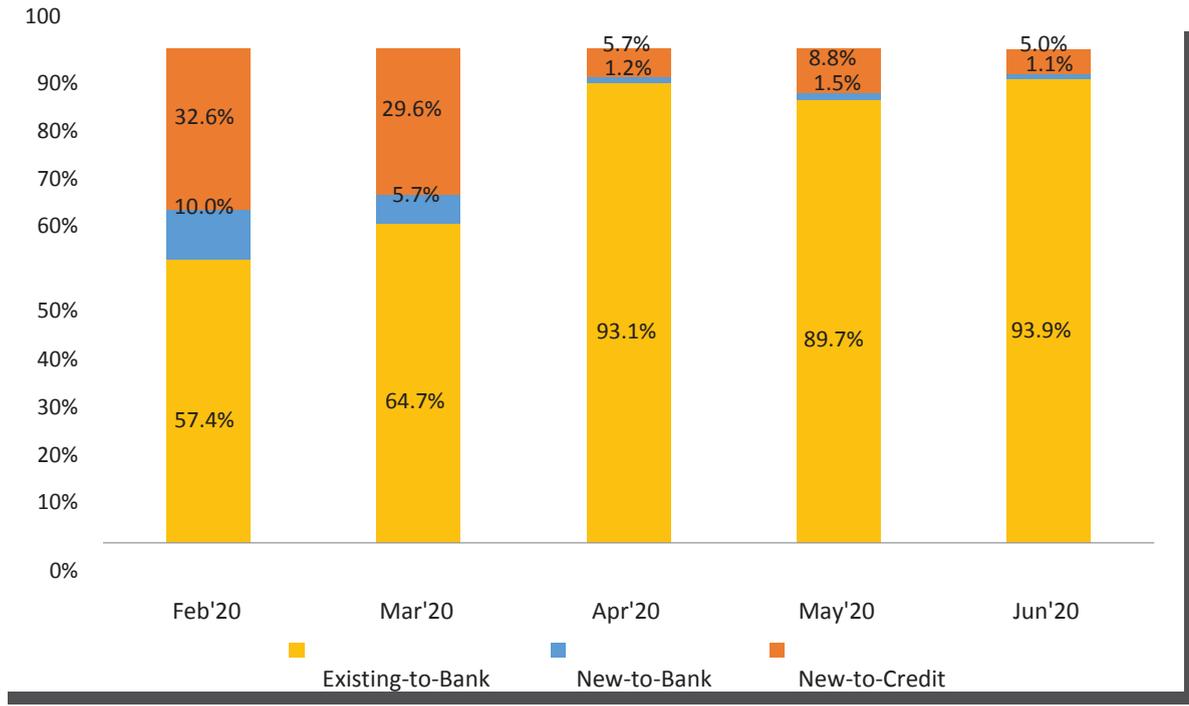


प्रदर्श्य 18 : मासानुमास राज्यवार ऋण संवितरण (मात्रा में) [फरवरी 20 के संवितरण अंकमान 1 पर सूचकांकित]



उधारकर्ताओं को ऋण आपूर्ति के मामले में ऋणदाताओं में जिस प्रकार की क्रियाशीलता परिलक्षित होती है, उसके मूल में बैंक के लिए नए (एनटीबी), बैंक के लिए मौजूदा (ईटीबी) और ऋण के लिए नए (एनटीसी) ग्राहकों में संवितरण की हिस्सेदारी का विश्लेषण किया गया है। ऐसा देखा गया है कि कोविड-पूर्व के काल में ईटीबी उधारकर्ताओं में संवितरण का अनुपात उच्चतम है और कोविड-पश्चात् की कालावधि में जून-20 तक यह स्थिति बहुत ही प्रभावी हो गई है। जबकि एनटीबी और एनटीसी के संबंध में ऋण संवितरण में कमी आई है। तथापि, यह उल्लेखनीय है कि जुलाई'20 और अगस्त'20 के दौरान एनटीबी और एनटीसी की पृच्छाओं में बढ़ोत्तरी हुई है, अतः, संवितरण में भी उनके हिस्से में अपेक्षित सुधार की प्रत्याशा की जा सकती है।

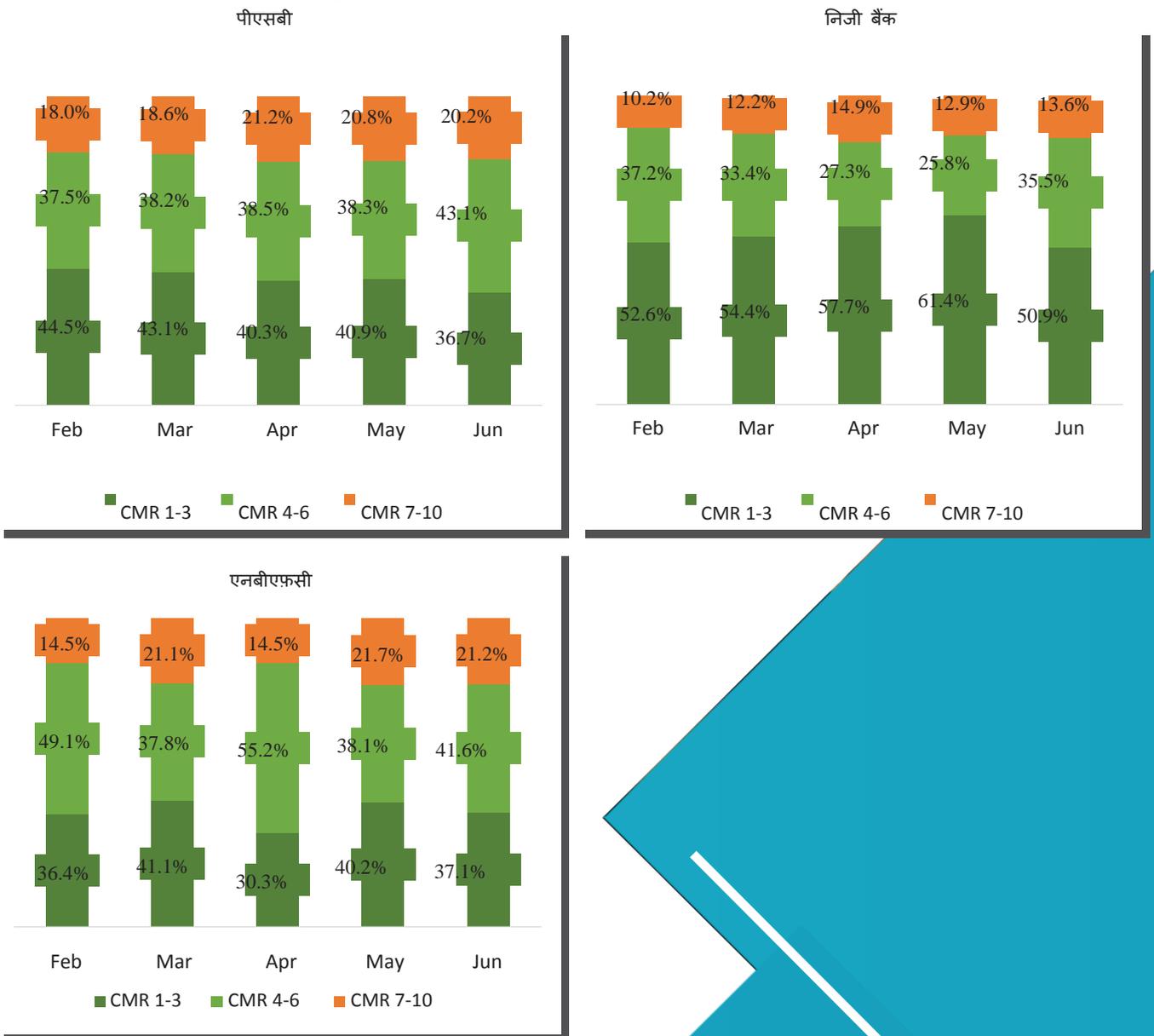
प्रदर्श्य 19 : उधारकर्ताओं के स्वरूप के अनुसार मासानुमास ऋण संवितरण (मात्रा में)



संवितरण के संबंध में सीएमआर विभाजन में बदलाव - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक /निजी बैंक /गैर-वित्त बैंक कंपनियों का ऋणदाता-वार पदक्रम

उद्योग स्तर पर, यथा जून'20 तक सभी ऋणदाता समूहों के लिए संवितरण सीएमआर 1-3 और सीएमआर 4-6 खंडों की ओर उन्मुख हो गए। तथापि, संभव है कि ईसीएलजीएस के अंतर्गत 100% ऋण गारंटी की पृष्ठभूमि में उधारदाताओं की ऋण लागत प्रभावित न हो और जैसा कि ऋण संबंधी पृच्छाओं में पाया गया है, अगस्त 2020 के लिए सीएमआर का वितरण अपेक्षाकृत कम जोखिम वाले सीएमआर खंड की ओर बढ़ा हुआ रहे।

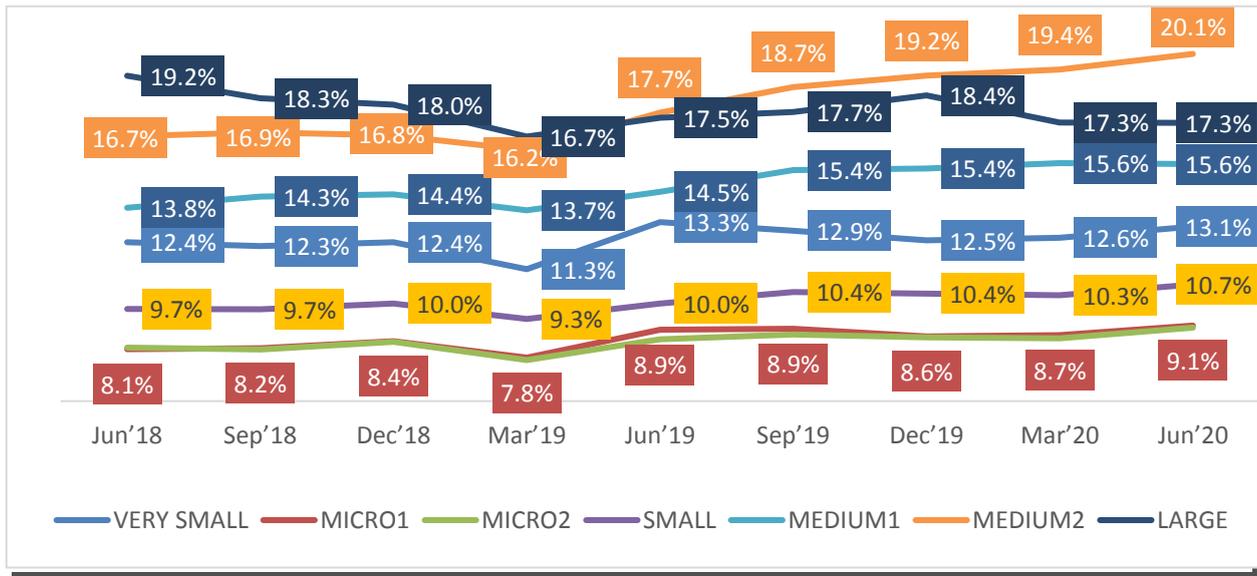
प्रदर्श्य 20 : सीएमआर के आधार पर मासानुमास ऋण संवितरण (मात्रा में)



एमएसएमई के ऋणों में एनपीए रुझान

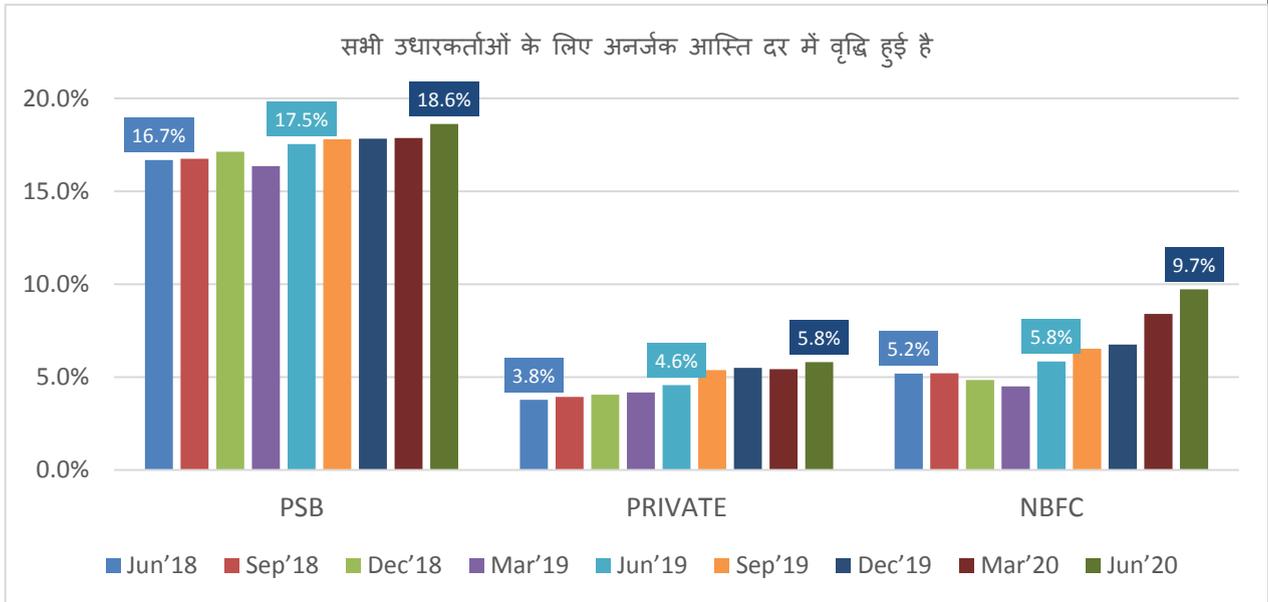
वाणिज्यिक उधारियों में समग्र एनपीए की दर जून 2019 के समान ही, जून 2020 में 16.1% पर स्थिर रही है। मार्च'20 के एनपीए के साथ तुलना करने पर देखा गया कि अधिकांश उप-खंडों के लिए एनपीए की दरों में मामूली सी बढ़त दिखाई देती है। एमएसएमई उप-खंडों के भीतर देखा गया कि वृहद आकार वाले ऋणों के लिए सभी उप-खंडों में एनपीए की दरें प्रायः अधिक होती हैं। इस प्रवृत्ति का अपवाद एक बहुत ही छोटा खंड (10 लाख से कम जोखिम-राशि वाला ऋण) है, जिसकी उच्चतर एनपीए दर जून'20 में 13.1% रही है

प्रदर्श्य 21 : खंड-वार एनपीए की दर



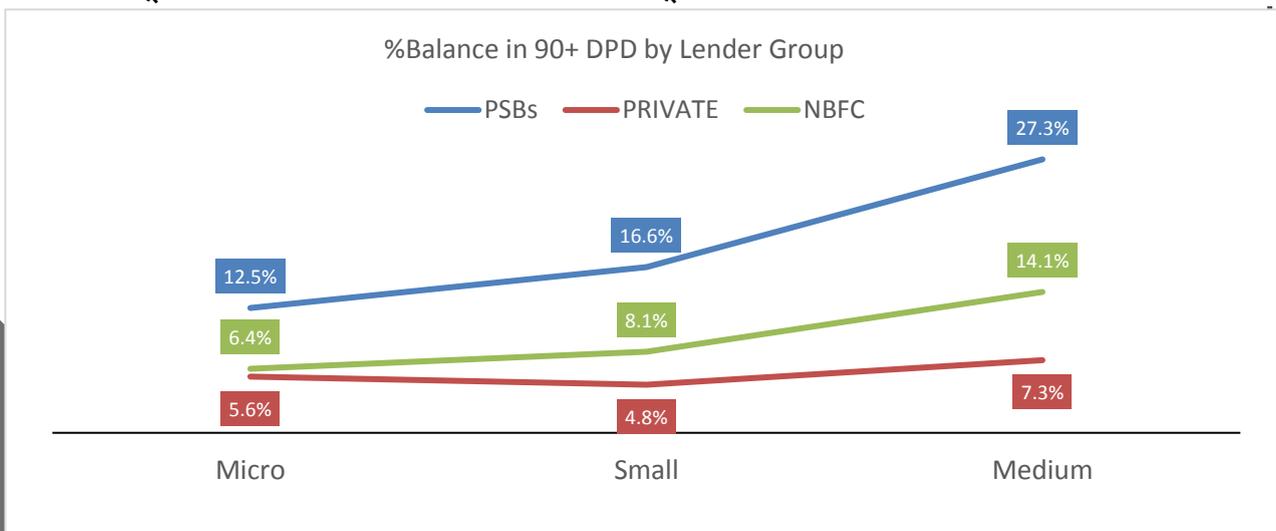
सभी ऋणदाताओं के बीच एमएसएमई उद्यमों से संबंधित एनपीए की दर : सभी ऋणदाताओं के लिए एमएसएमई क्षेत्र में एनपीए जून'19 के 11.4% से बढ़कर जून'20 में 16.1% हो गया है। निजी बैंकों की एनपीए दर जून'19 में 4.6% से बढ़कर जून'20 में 5.8% हो गई है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की एनपीए की दर जून'19 में 17.5% से बढ़कर जून'20 में 18.6% हो गई। लेकिन, एनबीएफसी की उधारियों में एनपीए दरों में सबसे महत्वपूर्ण वृद्धि जून'19 में 5.8% से जून'20 में 9.7% में देखी गई है। एनबीएफसी की एनपीए दरों में तेज वृद्धि के कारणों में एमएसएमई की ऋण संवृद्धि के मामले में उनकी सुस्ती प्रमुख कारण रही है।

प्रदर्श्य 22: एमएसएमई खंड के उधारकर्ताओं समूह की अनर्जक आस्ति दरें



ऋणदाता समूह और एमएसएमई उप-खंड के क्रॉस-टैब दृष्टिकोण से पता चलता है कि निजी बैंकों की अनर्जक आस्ति दरें उप-खंड स्तरों पर भी सबसे कम हैं और वाणिज्यिक क्षेत्र के बैंकों के सभी उप-खंडों में अनर्जक आस्ति दरें उच्चतम हैं। साथ ही, बड़े टिकट आकार वाले उप-खंडों के लिए अनर्जक आस्ति दरें सामान्यतः अधिक होती हैं, मोटे तौर पर यह प्रवात त्येक उधारदाता समूह के लिए सही साबित होती है।

प्रदर्श्य 23: जून 2020 में एमएसएमई खंडों के उधारकर्ता समूह में अनर्जक आस्ति दरें



संरचनात्मक दृष्टि से मजबूत एमएसएमई इकाईयाँ लगातार प्रतिरोधक्षमता बनी हुई है

कोविड-19 की वैश्विक महामारी ने एमएसएमई के लिए कई चुनौतियां खड़ी की हैं, जिससे हर एमएसएमई इकाई किसी न किसी रूप और प्रकार से प्रभावित हुई है। पिछले एमएसएमई पल्स में एक अध्ययन प्रकाशित किया गया था, जिसमें कहा गया था कि संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयाँ कोविड-19 की वैश्विक महामारी द्वारा उत्पन्न आगामी चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं और आज, जब हम एमएसएमई द्वारा प्रदर्शन के शुरुआती संकेत देखते हैं, इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न एमएसएमई इकाईयों पर कोविड-19 के वैश्विक महामारी के प्रभाव को दर्शाना है। एमएसएमई उधारकर्ताओं पर पड़े प्रभाव को समझने के लिए इस अध्ययन में अवधि के स्नेपशॉट्स पर निम्नवत विचार किया गया है-

- **कोविड के बाद:** मार्च 20 से जून-20 तक के चार महीनों की अवधि में कार्यनिष्पादन में हुए परिवर्तन संबंधी प्रदर्शन के स्नेपशॉट।
- **कोविड के पहले :** एक साल पहले की समान अवधि अर्थात मार्च 19 से जून 19 के चार महीनों की अवधि में कार्यनिष्पादन में हुए परिवर्तन संबंधी प्रदर्शन का स्नेपशॉट।

फरवरी 20 और जून 20 की अवधि के दौरान ऋण सुविधा प्राप्त उधारकर्ताओं को इस विश्लेषण के लिए विचार में लिया गया है। उपयुक्त जोखिम संकेतकों का पता करने के लिए उन्हें ऋणों के प्रकारों के आधार पर आगे के खंडों में वर्गीकृत किया गया है। एमएसएमई उधारकर्ताओं के लिए बतौर कार्यनिष्पादक संकेतक कम-से-कम एक सावधि ऋण होने और चुकौतीगत चूक को रखा गया है। चुकौतीगत चूक को उन ऋणों के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ भुगतान करने की आवश्यकता है, लेकिन मार्च से जून के बीच भुगतान नहीं किया गया था।

इसी तरह से, कम-से-कम एक ओवरड्राफ्ट/ ऋण की चलनिधि सुविधाएं प्राप्त एमएसएमई उधारकर्ताओं के लिए उपयोग दरों (स्तरों) में अवस्थांतर को कार्यनिष्पादक संकेतक के रूप में माना गया। उपयोग दरों को प्रासंगिक ऋण सुविधाओं के लिए सभी उधारदाताओं के ऋण सीमा में बकाया ऋण राशि के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है।

निम्नांकित विशेषताओं के आधार पर एमएसएमई उधारकर्ताओं को रूपायित किया गया है:

ऋण का प्रकार: फरवरी 20 में कुल 18.2 लाख करोड़ की एमएसएमई की बकाया राशि में 18% बकाया उन संस्थाओं में है जिनके पास केवल सावधि ऋण हैं और 43% केवल कार्यशील पूँजी ऋणप्रदाता संस्थाओं के पास हैं। यथा फरवरी 2020 तक शेष 39% निधि आधारित बकाया राशि वाले एमएसएमई, सावधि ऋण और कार्यशील पूँजी दोनों सुविधाओं के ऋणप्रदाता संस्थाओं के हैं।

Type of loan	Feb'19	Feb'20
Only TL	16%	18%
Only WC	39%	43%
TL+WC	45%	39%

सिबिल एमएसएमई श्रेणी (सीएमआर): सीएमआर वितरण से पता चलता है कि सीएमआर1 से सीएमआर3 अर्थात सुपर-प्राइम का हिस्सा 34% है, सीएमआर-4 से सीएमआर-6 अर्थात प्राइम का हिस्सा 36% हैं और शेष 29% का सब-प्राइम हिस्सा सीएमआर 7 से सीएमआर-10 में आता है।

CMR	Feb'19	Feb'20
CMR 1-3	30%	34%
CMR 4-6	38%	36%
CMR 7-10	32%	29%

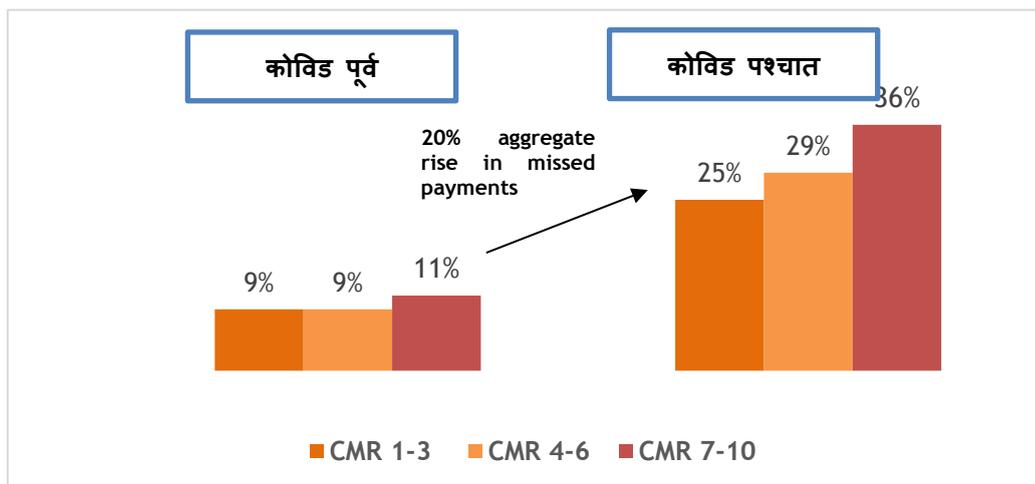




संरचनात्मक रूप से सुदृढ़ एमएसएमई में कोविड के बाद चुकौतीगत चूक के कम मामलों

कोविड के पहले के समय में कम-से-कम एक सावधि ऋण वाले एमएसएमई खंड में 9% से 11% उदयमों द्वारा उनसे जुड़े सीएमआर के आधार पर चुकौतीगत चूक हुई है। कोविड के बाद मार्च 20 से जून 20 के चार महीने की अवधि में यह चुकौतीगत चूक लगभग 30% तक बढ़ गयी। लेकिन, कोविड के बाद की तुलना में कोविड के पहले चुकौतीगत चूक के मामलों में वृद्धि एमएसएमई सीएमआर द्वारा कहीं अधिक स्पष्ट है।

प्रदर्श्य 24: सभी सीएमआरों में सावधि ऋण के लिए भुगतान में चूक का अनुपात



कोविड के बाद के 4 महीने की अवधि में, सीएमआर -1 से सीएमआर -3 में सीएमआर -7 से सीएमआर -10 की तुलना में चुकौती में चूक 25% के स्तर पर दर्ज है और यह दर्शाता है कि कोविड -19 की वैश्विक महामारी द्वारा उत्पन्न आर्थिक आघात में संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाइयां अपेक्षाकृत अधिक प्रतिरोधक्षम बनीं रहीं हैं।

सुपर-प्राइम एमएसएमई में उच्च उपयोग दर में अवस्थान्तर कम होता है

उधारकर्ताओं के उपयोग स्तर निम्न समूहों <50%, 50% -75% और 75%+ में दिये गए हैं। मार्च 20 से जून 20 तक के चार महीने के लिए उधारकर्ताओं के परिवर्तन मैट्रिक्स का अध्ययन उपर्युक्त निर्धारित उपयोग दर से किया गया और सीएमआर का उपयोग करके उधारकर्ताओं की संरचनात्मक सुदृढ़ता के आधार पर परिवर्तन मैट्रिक्स का अलग से अध्ययन किया जाता है।

प्रदर्श्य 25 कार्यशील पूँजी ऋणों के लिए उपयोगिता स्तर (दर) का अवस्थान्तर मैट्रिक्स

मार्च 20 तक सी एमआर	यथा मार्च 20 तक उपयोगिता दर का खाना	यथा जून 20 तक उपयोगिता दर का खाना			यथा फरवरी 20 तक उधारकर्ताओं का अनुपात
		<50%	50-75%	75%+	
सीएमआर1-3	<50%	77%	14%	9%	12.9%
	50-75%	34%	44%	22%	4.9%
	75%+	12%	16%	72%	10.7%
सीएमआर4-6	<50%	69%	16%	14%	8.6%
	50-75%	23%	49%	28%	6.3%
	75%+	6%	10%	84%	28.3%
सीएमआर7-10	<50%	87%	7%	6%	5.8%
	50-75%	14%	71%	15%	2.6%
	75%+	2%	3%	95%	19.9%

सीएमआर7-10 के सब-प्राइम खंड के उपयोग दरों का बहुत ही प्रतिबंधित अवस्थान्तर है क्योंकि अधिकांश उधारकर्ताओं के पास पहले से ही उच्च उपयोग दरें हैं। लेकिन, प्राइम और सुपर-प्राइम खंड के बीच, यह स्पष्ट है कि सीएमआर-4 से सीएमआर-6 के प्राइम खंड में सीएमआर-1 से सीएमआर-3 के सुपर-प्राइम खंड की तुलना में उच्च उपयोग दर में अवस्थान्तर अधिक है।

संक्षेप में कहें तो यदि चुकौती में चूक और बढ़ते उपयोग दरों को दबावग्रस्तता के शुरुआती लक्षण माना जाता है तो संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई कोविड की वैश्विक महामारी की स्थिति में भी अपेक्षाकृत अधिक प्रतिरोधक बन रहे हैं

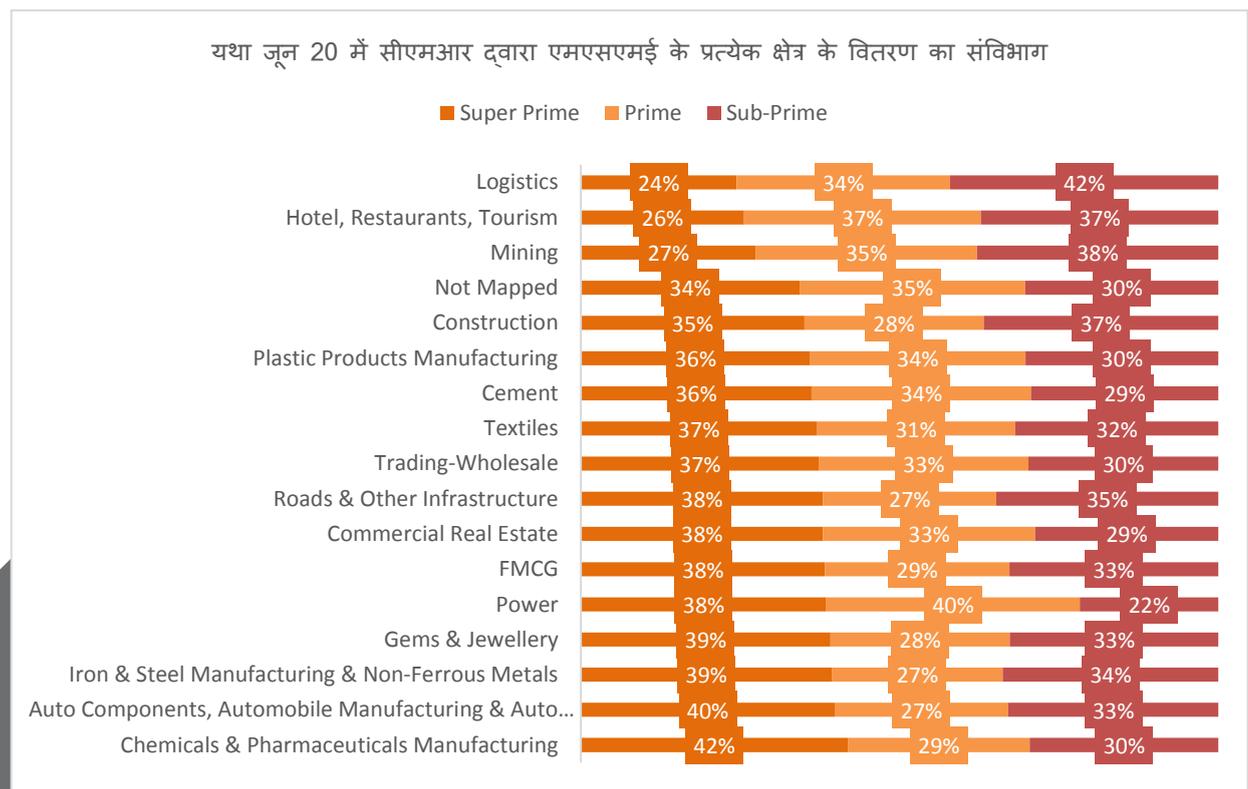
एमएसएमई इकाइयों का क्षेत्रगत जोखिम मूल्यांकन

प्रत्येक क्षेत्र में एमएसएमई की संरचनात्मक सुदृढ़ता को समझने के लिए एमएसएमई उधारकर्ताओं का क्षेत्र-वार जोखिम मूल्यांकन किया जाता है। क्षेत्र जिनके बारे में विश्लेषण किया गया है, उन्हें कोविड-19 से संबंधित दबाव के लिए समाधान संरचना पर के.वी. कामत की अध्यक्षता में गठित भारतीय रिजर्व बैंक की विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट से लिया गया है। चूंकि फरवरी 20 से जून '20 के दौरान एमएसएमई के सीएमआर वितरण की गति में मामूली विचलन रहा है, इसलिए इस विश्लेषण के लिए नवीनतम सीएमआर का उपयोग किया गया है।

सभी क्षेत्रों के लिए सीएमआर वितरण एक दूसरे से बहुत अलग है। प्रचालन तंत्र, होटल-रेस्तरां-पर्यटन और खनन क्षेत्रों में सुपर-प्राइम एमएसएमई का अनुपात कम है; किन्तु रासायनिक, फार्मास्यूटिकल्स विनिर्माण, ऑटो घटकों, विनिर्माण और डीलरशिप क्षेत्रों में सुपर-प्राइम एमएसएमई का हिस्सा अपेक्षाकृत उच्चतम है।

एक अन्य परिप्रेक्ष्य यह भी है कि सभी क्षेत्रों में कुछ एमएसएमई हैं जो या तो संरचनात्मक रूप से मजबूत हैं या कमजोर हैं। कोविड की स्थिति ने सभी क्षेत्रों को समान रूप से प्रभावित नहीं किया है, लेकिन हम देख सकते हैं कि अभी भी सभी क्षेत्रों में एक बड़ी मात्रा में अधिसंख्य एमएसएमई संरचनात्मक रूप से सुदृढ़ है और वर्तमान आर्थिक चुनौतियों में उनकी स्थिति बेहतर बनी रहेगी।

प्रदर्श्य 26 : यथा जून 20 में कामत समिति में सीएमआर आधार पर उल्लेख किए गए एमएसएमई क्षेत्र के वितरण संविभाग ⁴



⁴ ट्रांसयूनियन सिबिल के कमर्शियल क्रेडिट डेटाबेस को उधार देने वाली संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत जानकारी का उपयोग करके सेक्टरों को सर्वोत्तम प्रयास के आधार पर मैप किया जाता है; कामथ कमेटी की रिपोर्ट में केवल मार्ग का उल्लेख है, पूरे इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र के लिए बताए गए 4. मार्गों और अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर; कामथ कमेटी की रिपोर्ट में उपभोक्ता सामना / फूड का उल्लेख है। 9. एफएमसीजी खाद्य प्रसंस्करण और पेय पदार्थ क्षेत्र के लिए है; वे कंपनियाँ जो या तो कामथ समिति में उल्लिखित क्षेत्र से अलग हैं या क्षेत्र की जानकारी उपलब्ध नहीं है, उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है; सुपर एमएसएमई को सीएमआर के आधार पर प्राइम के रूप में वर्गीकृत किया गया है, यथा - सुपर प्राइम: सीएमआर-1 से सीएमआर-3, प्राइम: सीएमआर-4 से सीएमआर-6 और सब-प्राइम: सीएमआर-7 से सीएमआर-10

निष्कर्ष

कोविड की वैश्विक महामारी के कारण गत छह महीनों में एमएसएमई ऋण-प्रदायगी पारितंत्र में कई चुनौतियाँ और अवसर उपस्थित हुए हैं। पारितंत्र के सभी खिलाड़ी, एमएसएमई को ऋण प्रदान करने के नव-सामान्य तरीके को लगातार अपना रहे हैं।

सरकार द्वारा एमएसएमई के लिए 3 लाख करोड़ के पैकेज का यथा समय जारी किया जाने और उधारदाताओं द्वारा पैकेज को तुरंत अपनाए जाने से एमएसएमई इकाइयों को वर्तमान समय में लाभ उठाने के लिए अति अपेक्षित मंच उपलब्ध हुआ। हम बिहार, झारखंड, पंजाब और केरल जैसे राज्यों का निरीक्षण कर रहे हैं, जो एमएसएमई ऋण-प्रदायगी की बहाली में बढ़त ले रहे हैं, जबकि ऋण-प्रदायगी में सामान्य तौर पर व्यस्त रहने वाले महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे क्षेत्र बहाली की कहानी में पीछे हैं। यद्यपि, एमएसएमई के लिए ऋण उत्प्रेरण की ओर अधिकतम ध्यान है, जोखिम दृष्टिकोण से संरचनात्मक रूप से सुदृढ़ एमएसएमई अभी भी स्थिर बने हुए हैं।

जैसे-जैसे हम नव-सामान्यता की ओर आगे बढ़ेंगे, पारितंत्र के लिए कई नई चुनौतियाँ और अवसर हमारे समक्ष उभरेंगे। उद्योग के स्तर पर एमएसएमई की उत्कृष्टतम छटाओं पर नज़दीक से ध्यान देने और यथासमय इष्टतम हस्तक्षेप सुनिश्चित किए जाने से, दीर्घावधि में उधारदाताओं, एमएसएमई इकाइयों और अर्थव्यवस्था के लिए निरंतर संवृद्धि की आधारशिला होगी।



सिडबी के बारे में

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) की स्थापना संसद द्वारा पारित अधिनियम के तहत 1990 में की गई। यह सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र के संवर्द्धन, वित्तपोषण और विकास के लिए काम करने वाली प्रमुख वित्तीय संस्था है। साथ ही, यह इसी प्रकार की गतिविधियों में संलग्न विभिन्न संस्थाओं के कार्यों का समन्वयन भी करता है। वर्षों से, विभिन्न वित्तीय और विकासात्मक उपाय के माध्यम से बैंक ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के जीवन को छुआ है और उद्यमों पर प्रभाव डाला है और एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र में कई विश्वसनीय संस्थानों के साथ जुड़ा हुआ है। अधिक जानकारी के लिए www.sidbi.in देखें ।

ट्रांसयूनियन सिबिल के बारे में

ट्रांसयूनियन सिबिल भारत की अग्रणी क्रेडिट सूचना कंपनी है और विश्व भर में क्रेडिट जानकारी के वृहतर भंडारों में से एक है। हमारे पास 3000 से अधिक सदस्य हैं-जिनमें सभी अग्रणी बैंक, वित्तीय संस्थाएँ, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियाँ शामिल हैं- और व्यक्तियों और व्यवसायों के 900 मिलियन से अधिक क्रेडिट रिकॉर्ड का रखरखाव करती हैं।

हमारा ध्येय सूचना समाधान का सृजन है, जिससे व्यवसाय संवृद्धि सुलभ हो और उपभोक्ताओं को क्रेडिट और अन्य सेवाओं की त्वरित एवं सस्ती पहुंच में सक्षमता प्रदान करता है। हम जोखिम प्रबंधन के माध्यम से अपने सदस्यों के लिए अमूल्य आधार का सृजित करते हैं और लागत कम करने और संविभाग की लाभप्रदता बढ़ाने के लिए उपयुक्त उधार रणनीतियाँ तैयार करने में मदद करते हैं। उपभोक्ता और वाणिज्यिक उधारकर्ताओं के बारे में व्यापक, विश्वसनीय जानकारी से, वे व्यक्तियों और व्यवसायों के बारे में सुदृढ़ ऋण निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। सूचना- शक्ति के माध्यम से, ट्रांसयूनियन सीबिल एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था निर्माण के लिए हमारे सदस्यों के ऋण निवेश अभियान और वित्तीय समावेशन के लिए प्रयासरत है।

अच्छाई के लिए हम इस जानकारी की मांग करते हैं।

TransUnion^{tu} CIBIL

ट्रान्सयूनियन सिबिल

[पूर्व क्रेडिट इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (इंडिया) लिमिटेड

सिन /CIN: U72300MH2000PLC128359

P: 6638 4600

F: 6638 4666

W: transunioncibil.com

वन इंडियाबुल सेंटर , टावर -2 ए , 19वीं मंजिल

सेनापति बापट मार्ग, एलिफीन्स्टन रोड,

मुंबई - 400 013.